॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जन्मपत्रिका

Ojas
03/09/2013 02:30 PM
Ujjain, Madhya Pradesh

निर्मित

सामान्य कुंडली विवरण

सामान्य विवरण

जन्म दिनांक	03/09/2013
जन्म समय	14:30
जन्म स्थान	Ujjain, Madhya Pradesh
अक्षांश	23 N 10
देशांतर	75 E 47
समय क्षेत्र	+05:30
अयनांश	24:02:53
सूर्योदय	6:9:34
सूर्यास्त	18:42:28

घात चक्र

महीना	श्रावण
तिथि	3,8,13
दिन	शुक्रवार
नक्षत्र	भरणी
योग	वज्र
करण	तैतिल
प्रहर	1
चंद्र	6

पंचांग विवरण

तिथि	कृष्ण त्रयोदशी
योग	परिघ
नक्षत्र	अश्लेषा
करण	वणिजा

ज्योतिषीय विवरण

वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
योनि	मार्जार
गण	राक्षस
नाड़ी	अंत्य
जन्म राशि	कर्क
राशि स्वामी	चन्द्र
नक्षत्र	अश्लेषा
नक्षत्र स्वामी	बुध
चरण	2
युञ्जा	मध्य
तत्त्व	जल
नामाक्षर	दू
पाया	चांदी
लग्न	धनु
लग्न स्वामी	गुरु

astrorobo.com

ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	सिंह	16:58:37	सूर्य	पूर्व फाल्गुनी	शुक्र	नौवां
चन्द्र	--	कर्क	22:39:52	चन्द्र	अश्लेषा	बुध	आठवाँ
मंगल	--	कर्क	09:57:44	चन्द्र	पुष्य	शनि	आठवाँ
बुध	--	सिंह	25:42:25	सूर्य	पूर्व फाल्गुनी	शुक्र	नौवां
गुरु	--	मिथुन	20:21:15	बुध	पुनर्वसु	गुरु	सातवाँ
शुक्र	--	कन्या	26:47:17	बुध	चित्रा	मंगल	दसवां
शनि	--	तुला	13:17:28	शुक्र	स्वाति	राहु	ग्यारहवाँ
राहु	हाँ	तुला	16:33:07	शुक्र	स्वाति	राहु	ग्यारहवाँ
केतु	हाँ	मेष	16:33:07	मंगल	भरणी	शुक्र	पाँचवा
लग्न	--	धनु	08:29:36	गुरु	मूल	केतु	पहला

सूर्य
सिंह
पूर्व फाल्गुनी
योगकारक

चन्द्र
कर्क
अश्लेषा
सम

मंगल
कर्क
पुष्य
योगकारक

बुध
सिंह
पूर्व फाल्गुनी
हानिप्रद

गुरु
मिथुन
पुनर्वसु
सम

शुक्र
कन्या
चित्रा
हानिप्रद

शनि
तुला
स्वाति
हानिप्रद

राहु
तुला
स्वाति
--

केतु
मेष
भरणी
--

astrorobo.com

जन्म कुंडली

लग्न कुंडली

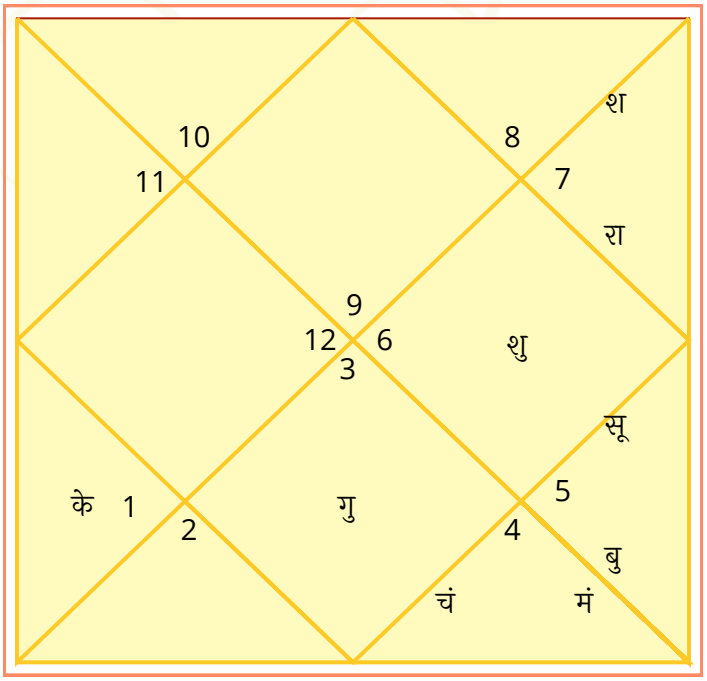

व्यक्ति के जन्म के समय आकाश में पूर्वी क्षितिज जो राशि उदित होती है, उसे ही उसके लग्न की संज्ञा दी जाती है। जन्म कुण्डली में 12 भाव होते है। इन 12 भावों में से प्रथम भाव को लग्न कहा जाता है। कुण्डली में अन्य सभी भावों की तुलना में लग्न को सबसे अधिक महत्व पूर्ण माना जाता है। लग्न भाव बालक के स्वभाव, रुचि, विशेषताओ और चरित्र के गुणों को प्रकट करता है।

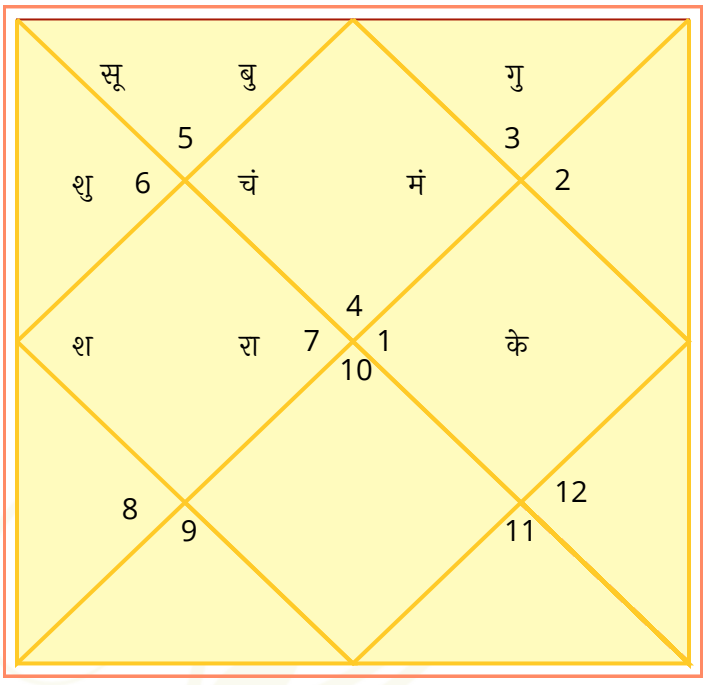

चंद्र कुंडली

लग्न कुंडली के बाद जिस राशि में चंद्रमा होता है उसे लग्न मानकर एक और कुंडली का निर्माण होता है जो चन्द्र कुंडली कहलाती है। चंद्र कुंडली का भी फलित ज्योतिष में लग्न कुंडली जितना ही महत्त्व है। लग्न शरीर, तो चंद्र मन का कारक है और वे एक दूसरे के पूरक हैं।

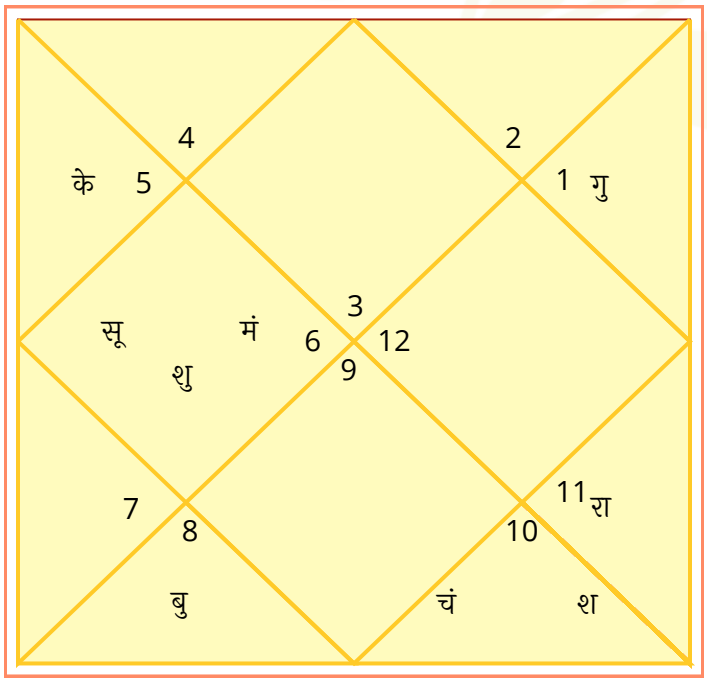

नवमांश कुंडली

नवांश कुण्डली को नौ भागों में बांटा जाता है, जिसके आधार पर जन्म कुण्डली का विवेचन होता है। नवांश कुण्डली में यदि ग्रह अच्छी स्थिति या उच्च के हों तो वर्गोत्तम की स्थित उत्पन्न होती है और व्यक्ति शारीरिक व आत्मिक रुप से स्वस्थ हो शुभ दायक स्थिति को पाता है।

astrorobo.com

भाव सन्धि

लग्न - 08:29:36 दशम भाव मध्य - 20:33:49

भाव	जन्म राशि	भाव मध्य	जन्म राशि	भाव संधि
1	धनु	08:29:36	धनु	25:30:18
2	मकर	12:31:00	मकर	29:31:42
3	कुम्भ	16:32:24	मीन	03:33:06
4	मीन	20:33:49	मेष	03:33:06
5	मेष	16:32:24	मेष	29:31:42
6	वृष	12:31:00	वृष	25:30:18
7	मिथुन	08:29:36	मिथुन	25:30:18
8	कर्क	12:31:00	कर्क	29:31:42
9	सिंह	16:32:24	कन्या	03:33:06
10	कन्या	20:33:49	तुला	03:33:06
11	तुला	16:32:24	तुला	29:31:42
12	वृश्चिक	12:31:00	वृश्चिक	25:30:18

चलित कुंडली

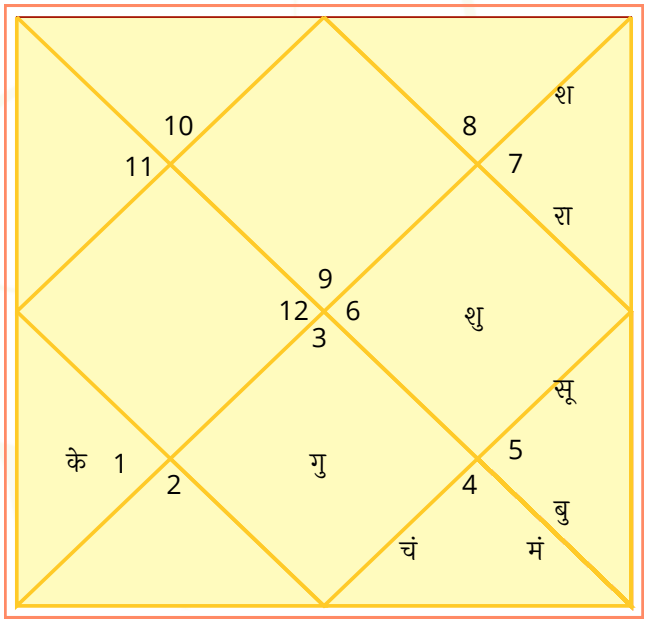

लग्न कुंडली का शोधन चलित कुंडली है, अंतर सिर्फ इतना है कि लग्न कुंडली यह दर्शाती है कि जन्म के समय क्या लग्न है और सभी ग्रह किस राशि में विचरण कर रहे हैं और चलित से यह स्पष्ट होता है कि जन्म समय किस भाव में कौन सी राशि का प्रभाव है और किस भाव पर कौन सा ग्रह प्रभाव डाल रहा है।

astrorobo.com

वर्ग कुंडली

सूर्य कुंडली

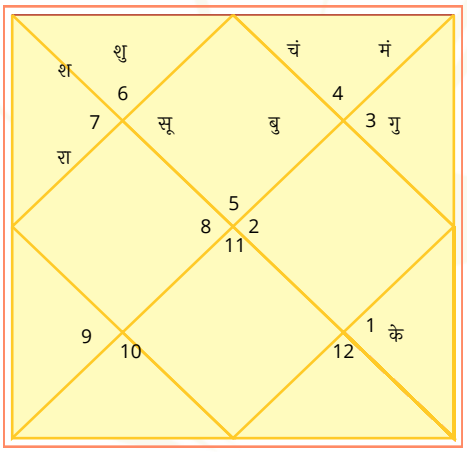

शरीर, स्वास्थ्य, रचना

होरा कुंडली

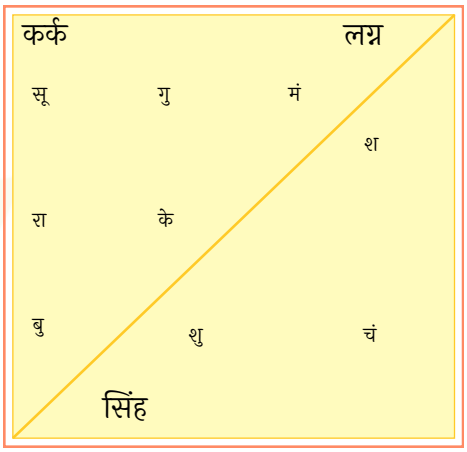

वित्त , धन -सम्पदा, समृद्धि

द्रेष्काण कुंडली

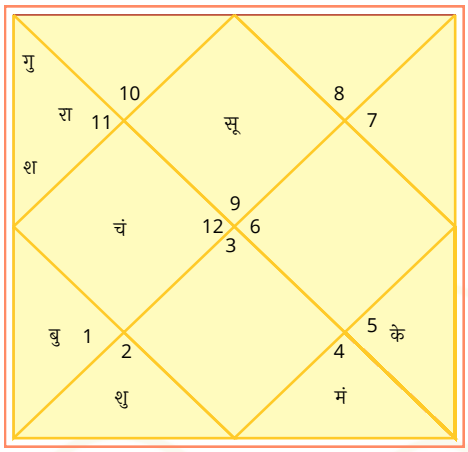

भाई बहन

चतुर्थांश कुंडली

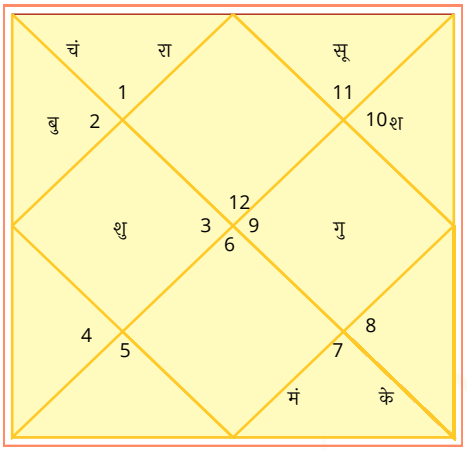

भाग्य

पंचमांश कुंडली

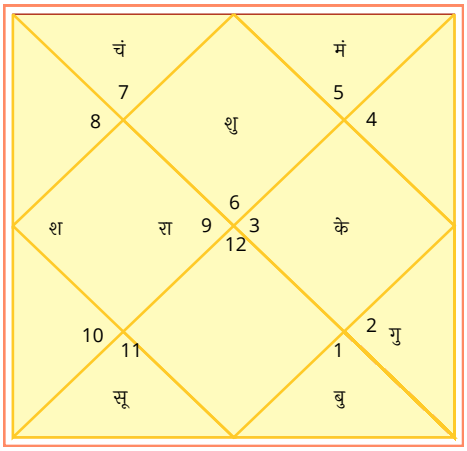

आध्यात्मिकता

सप्तमांश कुंडली

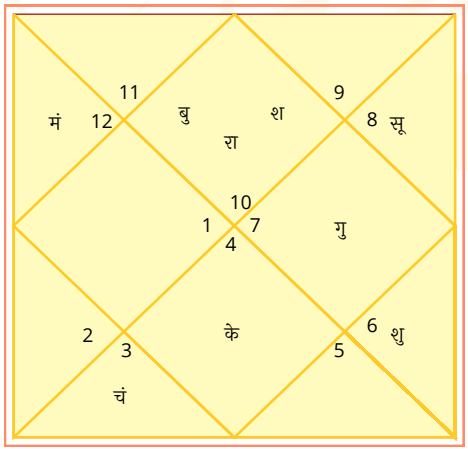

सन्तान

अष्टमांश कुंडली

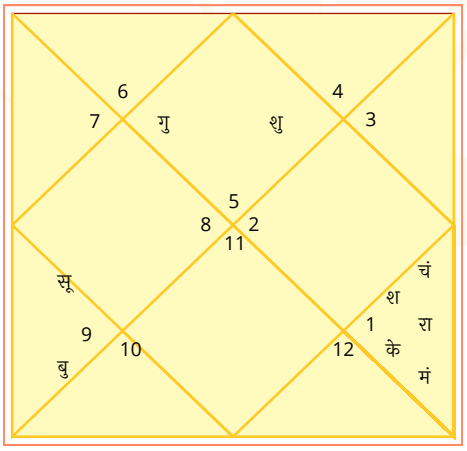

आयु

दशमांश कुंडली

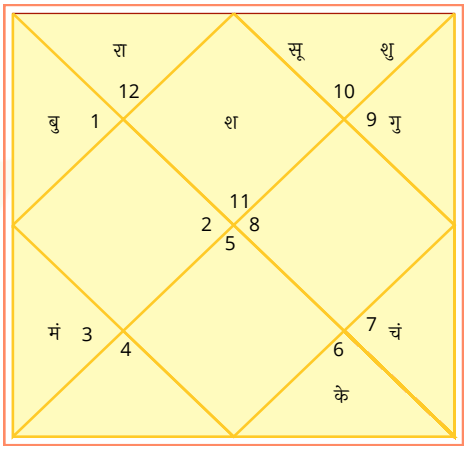

व्यवसाय, जीवनयापन

द्वादशांश कुंडली

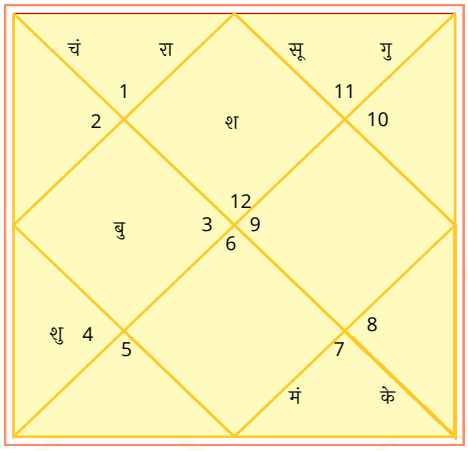

माता-पिता, पैतृक सुख

astrorobo.com

वर्ग कुंडली

षोडशांश कुंडली

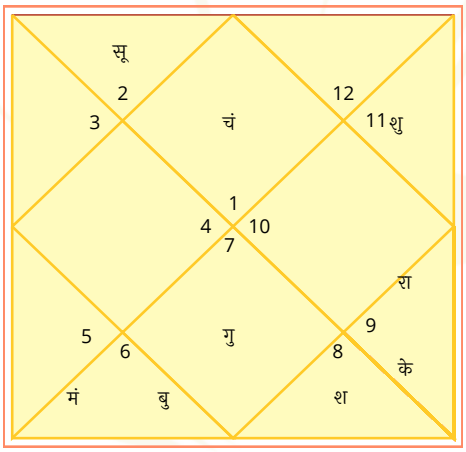

सुख, दुख, वाहन

विशमांश कुंडली

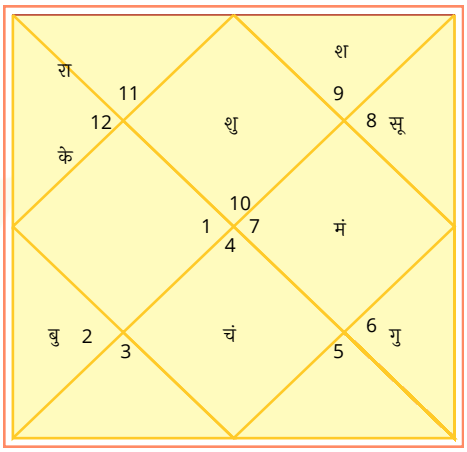

आध्यात्मिक प्रगति एवं पूजा पाठ

चतुर्विंशांश कुंडली

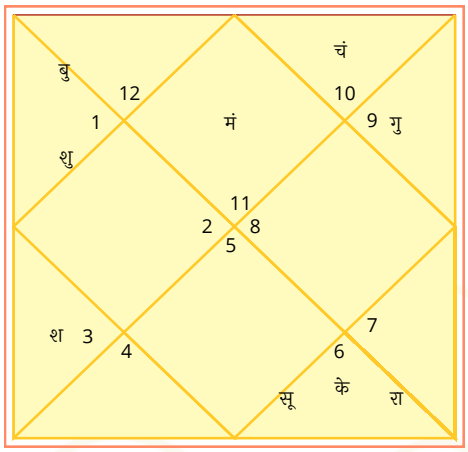

शैक्षणिक उपलब्धि, शिक्षा

भांष कुंडली

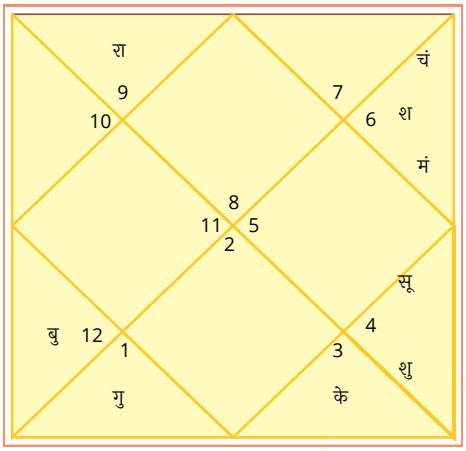

शारीरिक शक्ति, सहनशक्ति

त्रिषमांष कुंडली

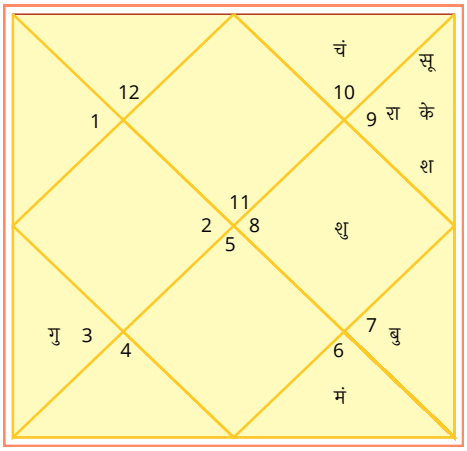

बुराई, विपत्तियां

खवेदांश कुंडली

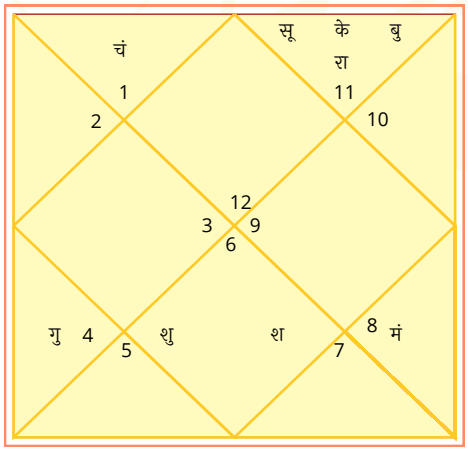

शुभ और अशुभ प्रभाव

अक्षवेदांश कुंडली

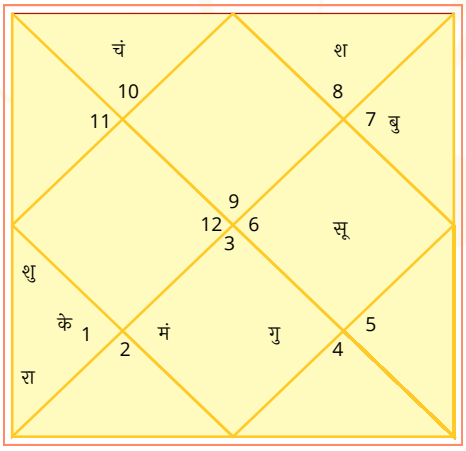

जातक का चरित्र और आचरण

षष्टयांश कुंडली

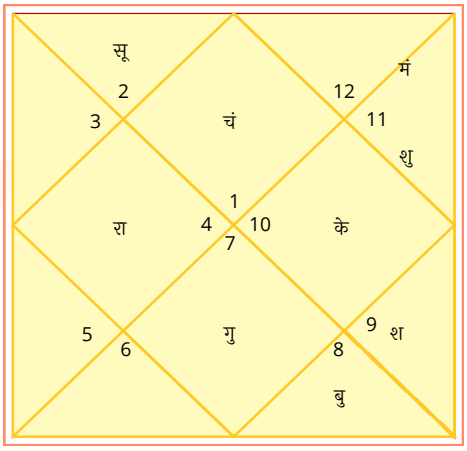

सामान्य खुशियाँ

astrorobo.com

पंचधा मैत्री चक्र

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	--	सम	मित्र	सम	सम	सम
मंगल	मित्र	मित्र	--	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	मित्र	शत्रु	सम	--	सम	मित्र	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	--	शत्रु	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	--	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	--

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
चंद्र	मित्र	--	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	--	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	--	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	--	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	--	मित्र
शनि	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	--

astrorobo.com

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम
चंद्र	अतिमित्र	--	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	मित्र
मंगल	अतिमित्र	सम	--	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र
बुध	सम	सम	मित्र	--	मित्र	अतिमित्र	मित्र
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	--	सम	शत्रु
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	मित्र	--	अतिमित्र
शनि	सम	सम	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	--

astrorobo.com

कृष्णमूर्ति पद्धति ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	भाव
सूर्य	--	सिंह	136:58:37	सूर्य	नौवां
चन्द्र	--	कर्क	112:39:52	चन्द्र	आठवाँ
मंगल	--	कर्क	99:57:44	चन्द्र	आठवाँ
बुध	--	सिंह	145:42:25	सूर्य	नौवां
गुरु	--	मिथुन	80:21:15	बुध	सातवाँ
शुक्र	--	कन्या	176:47:17	बुध	दसवां
शनि	--	तुला	193:17:27	शुक्र	ग्यारहवाँ
राहु	हाँ	तुला	196:33:07	शुक्र	ग्यारहवाँ
केतु	हाँ	मेष	16:33:07	मंगल	पाँचवा
लग्न	--	धनु	248:29:36	गुरु	पहला

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	चरण	सब	सब-सब
सूर्य	पूर्व फाल्गुनी	शुक्र	2	चन्द्र	बुध
चन्द्र	अश्लेषा	बुध	2	चन्द्र	गुरु
मंगल	पुष्य	शनि	2	शुक्र	बुध
बुध	पूर्व फाल्गुनी	शुक्र	4	बुध	शनि
गुरु	पुनर्वसु	गुरु	1	गुरु	शनि
शुक्र	चित्रा	मंगल	2	गुरु	बुध
शनि	स्वाति	राहु	2	बुध	सूर्य
राहु	स्वाति	राहु	3	शुक्र	गुरु
केतु	भरणी	शुक्र	1	चन्द्र	गुरु
लग्न	मूल	राहु	3	केतु	बुध

astrorobo.com

कृष्णमूर्ति पद्धति भाव संधि और कुंडली

भाव	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	सब	सब-सब
1	मकर	272:32:29	शनि	उत्तर षाढ़ा	सूर्य	गुरु	चन्द्र
2	कुम्भ	305:28:17	शनि	धनिष्ठा	मंगल	सूर्य	शुक्र
3	मीन	340:54:16	गुरु	उत्तर भाद्रपद	शनि	सूर्य	शुक्र
4	मेष	14:36:42	मंगल	भरणी	शुक्र	शुक्र	गुरु
5	वृष	43:34:14	शुक्र	रोहिणी	चन्द्र	राहु	सूर्य
6	मिथुन	68:37:36	बुध	आर्द्रा	राहु	राहु	मंगल
7	कर्क	92:32:29	चन्द्र	पुनर्वसु	गुरु	राहु	केतु
8	सिंह	125:28:17	सूर्य	मघा	केतु	मंगल	सूर्य
9	कन्या	160:54:16	बुध	हस्त	चन्द्र	चन्द्र	शुक्र
10	तुला	194:36:42	शुक्र	स्वाति	राहु	केतु	शुक्र
11	वृश्चिक	223:34:14	मंगल	अनुराधा	शनि	राहु	शनि
12	धनु	248:37:36	गुरु	मूल	राहु	शुक्र	शुक्र

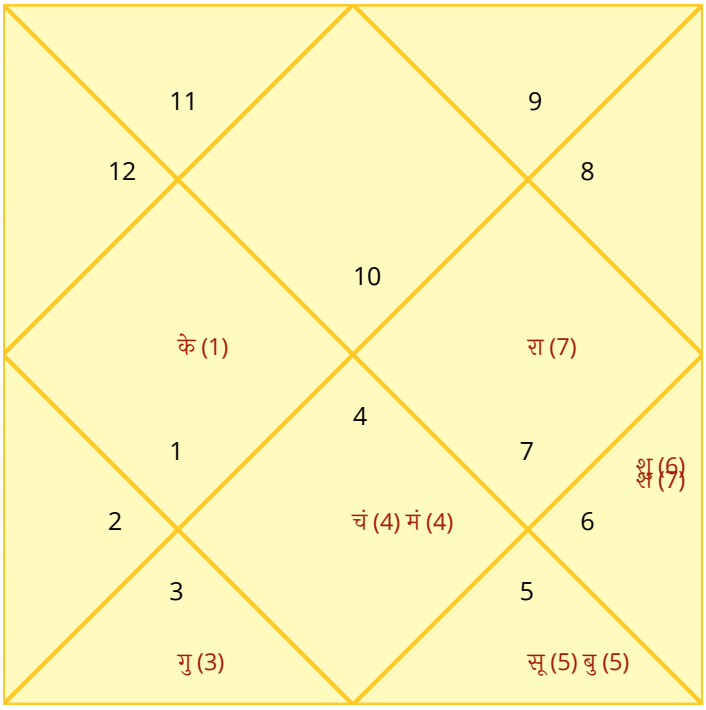

astrorobo.com

सूर्य भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	1	1	1	1	0	1	0	6
वृषभ	1	1	1	1	0	0	1	1	6
मिथुन	1	0	0	1	0	0	1	0	3
कर्क	0	0	1	1	0	0	1	0	3
सिंह	1	0	1	0	0	1	1	0	4
कन्या	1	1	0	0	0	0	0	1	3
तुला	0	0	1	1	1	0	1	1	5
वृश्चिक	1	0	0	0	1	0	1	1	4
धनु	0	1	0	1	0	0	0	0	2
मकर	0	0	1	1	0	0	1	0	3
कुंभ	1	0	1	0	1	1	0	1	5
मीन	1	0	1	0	0	1	0	1	4

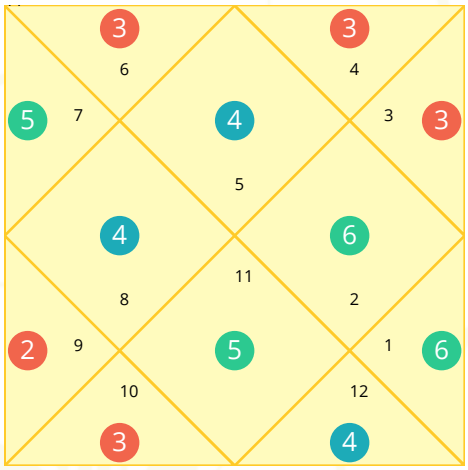

अभिप्राय

पिता | व्यक्तिगत प्रभाव | राजकीय कृपा

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

astrorobo.com

चंद्र भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	1	1	0	1	0	0	0	3
वृषभ	1	1	1	1	1	1	0	1	7
मिथुन	1	0	0	1	1	1	0	0	4
कर्क	0	1	0	0	0	1	0	0	2
सिंह	0	0	1	1	0	0	1	0	3
कन्या	0	1	1	0	1	0	0	1	4
तुला	1	0	0	1	0	0	0	1	3
वृश्चिक	0	0	1	1	0	1	0	0	3
धनु	0	1	1	1	1	1	1	0	6
मकर	1	1	0	0	1	1	0	0	4
कुंभ	1	0	0	1	0	0	1	1	4
मीन	1	0	1	1	1	1	1	0	6

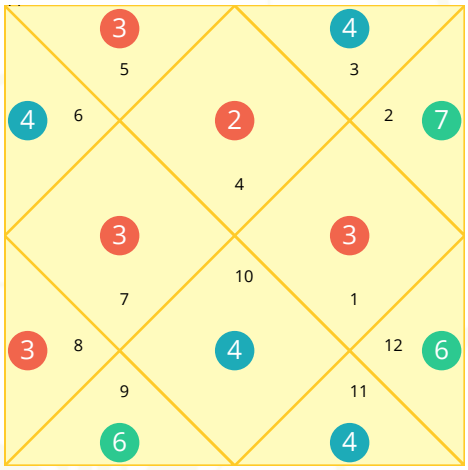

अभिप्राय

माता | मन | भावना | बुद्धि

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

astrorobo.com

मंगल भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	0	1	0	1	1	1	0	4
वृषभ	1	1	1	0	1	0	1	1	6
मिथुन	1	0	0	1	0	0	1	0	3
कर्क	0	0	1	0	0	1	1	0	3
सिंह	0	0	1	0	0	1	1	0	3
कन्या	0	1	0	0	0	0	0	1	2
तुला	1	0	1	1	0	0	1	1	5
वृश्चिक	0	0	0	0	1	0	0	0	1
धनु	1	1	0	1	0	0	0	1	4
मकर	1	0	1	1	0	0	1	0	4
कुंभ	0	0	1	0	0	1	0	1	3
मीन	0	0	0	0	1	0	0	0	1

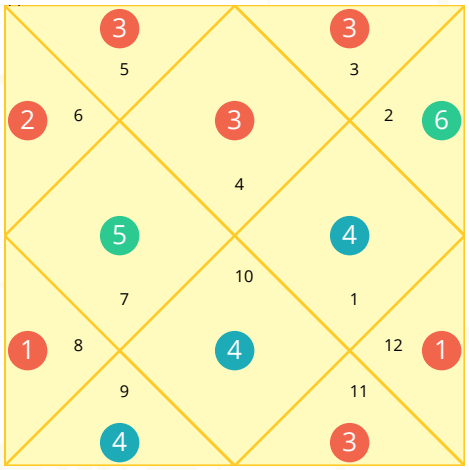

अभिप्राय

भाई-बहन | भूमि-संपत्ति | दुध?टना | विवाद

सूचक

शुभ

अशुभ

मिश्रित

astrorobo.com

बुध भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	1	1	1	1	1	1	0	7
वृषभ	0	1	1	1	1	1	1	1	7
मिथुन	1	0	0	1	0	0	1	0	3
कर्क	1	0	1	1	0	1	1	1	6
सिंह	0	1	1	1	0	0	1	0	4
कन्या	0	0	0	0	0	1	0	1	2
तुला	0	1	1	1	0	1	1	1	6
वृश्चिक	0	0	0	0	1	1	1	0	3
धनु	1	1	0	1	0	1	0	1	5
मकर	1	0	1	1	1	1	1	1	7
कुंभ	0	1	1	0	0	0	0	0	2
मीन	0	0	1	0	0	0	0	1	2

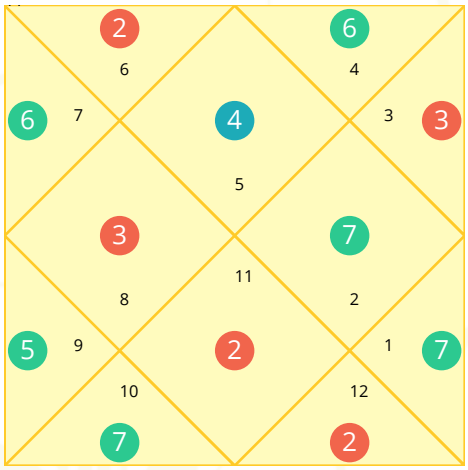

अभिप्राय

रिश्तेदार | वक्तृता | विवेकबुद्धि | शिक्षा

सूचक

शुभ

अशुभ

मिश्रित

astrorobo.com

गुरु भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	0	1	1	1	0	0	1	5
वृषभ	1	1	1	1	0	1	0	1	6
मिथुन	1	0	0	1	1	1	0	1	5
कर्क	0	0	1	0	1	1	0	0	3
सिंह	1	1	1	1	1	0	0	1	6
कन्या	1	0	0	1	1	0	1	1	5
तुला	1	0	1	0	0	1	0	1	4
वृश्चिक	1	1	0	1	0	0	0	0	3
धनु	0	0	0	1	1	0	1	1	4
मकर	0	1	1	1	1	1	0	1	6
कुंभ	1	0	1	0	0	1	1	0	4
मीन	1	1	0	0	1	0	1	1	5

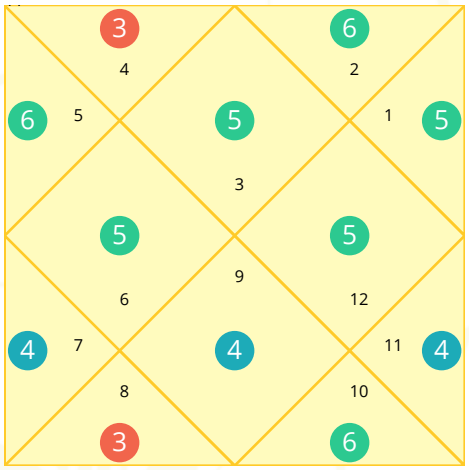

अभिप्राय

संतान | सम्मान | धार्मिक कर्म | सीखना | भाग्य

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

astrorobo.com

शुक्र भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	0	0	1	1	1	0	1	4
वृषभ	0	1	1	0	0	1	1	0	4
मिथुन	1	1	1	1	0	1	1	0	6
कर्क	1	1	0	0	0	1	1	1	5
सिंह	0	1	0	0	0	0	1	1	3
कन्या	0	1	1	0	0	1	0	0	3
तुला	0	1	0	1	1	1	0	1	5
वृश्चिक	0	1	1	0	0	1	0	0	3
धनु	0	0	1	1	0	1	1	1	5
मकर	0	0	0	1	1	1	1	1	5
कुंभ	0	1	0	0	1	0	1	1	4
मीन	1	1	1	0	1	0	0	1	5

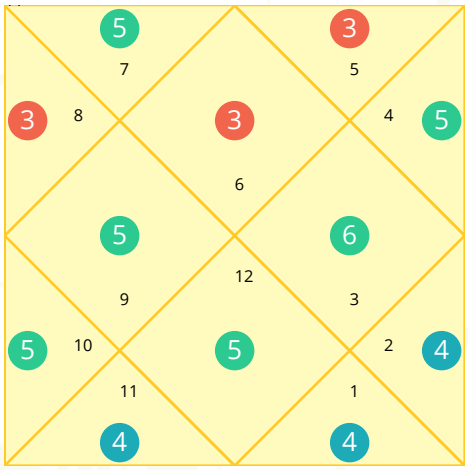

अभिप्राय

पति या पत्नी | विवाह | वाहन | आभूषण

सूचक

शुभ

अशुभ

मिश्रित

astrorobo.com

शनि भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	0	1	1	1	0	0	0	3
वृषभ	1	1	1	1	1	0	0	1	6
मिथुन	1	0	1	1	0	0	0	0	3
कर्क	0	0	0	1	0	1	0	0	2
सिंह	1	0	0	0	0	1	1	0	3
कन्या	1	1	1	0	0	0	0	1	4
तुला	0	0	0	0	1	0	0	1	2
वृश्चिक	1	0	1	0	1	0	0	0	3
धनु	0	1	1	0	0	0	1	1	4
मकर	0	0	0	1	0	0	0	0	1
कुंभ	1	0	0	0	0	1	1	1	4
मीन	1	0	0	1	0	0	1	1	4

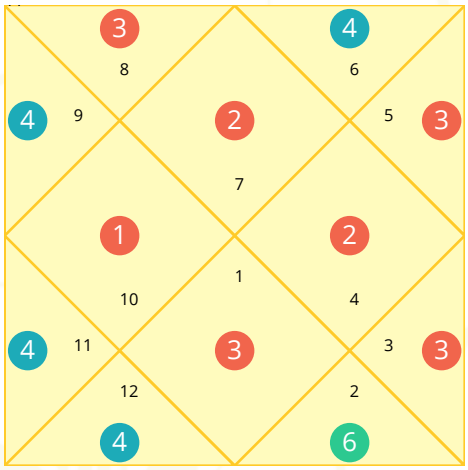

अभिप्राय

कर्मचारी | जीविका | कष्ट व शोक

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

astrorobo.com

लग्न भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	1	1	0	1	1	0	0	4
वृषभ	1	1	1	1	0	1	0	1	6
मिथुन	1	1	0	1	1	0	0	0	4
कर्क	1	0	1	0	1	0	1	0	4
सिंह	0	0	0	1	0	0	1	0	2
कन्या	0	1	1	1	1	1	0	1	6
तुला	1	0	0	0	1	1	1	1	5
वृश्चिक	1	0	0	1	1	1	0	0	4
धनु	0	1	1	0	1	1	1	0	5
मकर	1	0	0	1	0	1	1	0	4
कुंभ	0	0	0	0	1	0	0	1	2
मीन	0	0	0	1	1	0	1	0	3

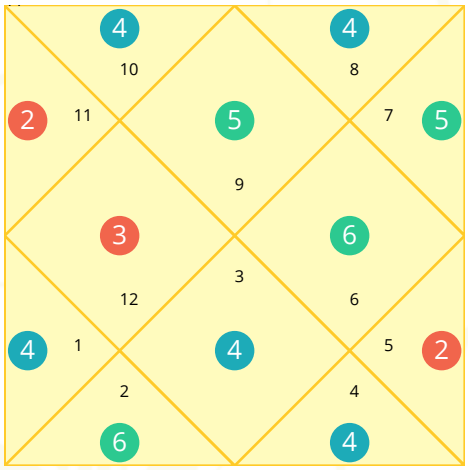

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

astrorobo.com

सर्वाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	6	3	4	7	5	4	3	0	32
वृषभ	6	7	6	7	6	4	6	0	42
मिथुन	3	4	3	3	5	6	3	0	27
कर्क	3	2	3	6	3	5	2	0	24
सिंह	4	3	3	4	6	3	3	0	26
कन्या	3	4	2	2	5	3	4	0	23
तुला	5	3	5	6	4	5	2	0	30
वृश्चिक	4	3	1	3	3	3	3	0	20
धनु	2	6	4	5	4	5	4	0	30
मकर	3	4	4	7	6	5	1	0	30
कुंभ	5	4	3	2	4	4	4	0	26
मीन	4	6	1	2	5	5	4	0	27

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

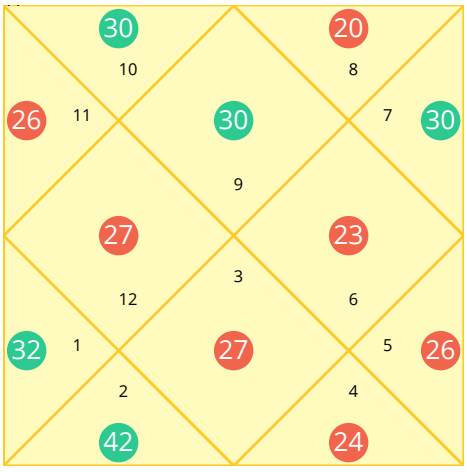

astrorobo.com

विम्शोत्तरी दशा - I

बुध

10-01-2006 10:20
10-01-2023 16:20

बुध	08-06-2008 01:47
केतु	05-06-2009 06:44
शुक्र	05-04-2012 03:44
सूर्य	09-02-2013 14:50
चन्द्र	12-07-2014 01:20
मंगल	09-07-2015 06:17
राहु	25-01-2018 15:35
गुरु	02-05-2020 13:11
शनि	10-01-2023 16:20

केतु

10-01-2023 16:20
10-01-2030 10:20

केतु	08-06-2023 19:47
शुक्र	07-08-2024 22:47
सूर्य	13-12-2024 18:53
चन्द्र	14-07-2025 20:23
मंगल	10-12-2025 23:50
राहु	29-12-2026 12:08
गुरु	05-12-2027 09:44
शनि	13-01-2029 05:23
बुध	10-01-2030 10:20

शुक्र

10-01-2030 10:20
10-01-2050 10:20

शुक्र	11-05-2033 22:20
सूर्य	12-05-2034 04:20
चन्द्र	10-01-2036 22:20
मंगल	12-03-2037 01:20
राहु	11-03-2040 19:20
गुरु	10-11-2042 19:20
शनि	10-01-2046 10:20
बुध	10-11-2048 07:20
केतु	10-01-2050 10:20

सूर्य

10-01-2050 10:20
10-01-2056 22:20

सूर्य	30-04-2050 00:08
चन्द्र	29-10-2050 15:08
मंगल	06-03-2051 11:14
राहु	29-01-2052 04:38
गुरु	16-11-2052 09:26
शनि	29-10-2053 09:08
बुध	04-09-2054 20:14
केतु	10-01-2055 16:20
शुक्र	10-01-2056 22:20

चन्द्र

10-01-2056 22:20
10-01-2066 10:20

चन्द्र	10-11-2056 07:20
मंगल	11-06-2057 08:50
राहु	11-12-2058 05:50
गुरु	11-04-2060 05:50
शनि	10-11-2061 13:20
बुध	11-04-2063 23:50
केतु	11-11-2063 01:20
शुक्र	11-07-2065 19:20
सूर्य	10-01-2066 10:20

मंगल

10-01-2066 10:20
10-01-2073 04:20

मंगल	08-06-2066 13:47
राहु	27-06-2067 02:05
गुरु	01-06-2068 23:41
शनि	11-07-2069 19:20
बुध	09-07-2070 00:17
केतु	05-12-2070 03:44
शुक्र	04-02-2072 06:44
सूर्य	11-06-2072 02:50
चन्द्र	10-01-2073 04:20

astrorobo.com

विम्शोत्तरी दशा - II

राहु		गुरु		शनि	
10-01-2073 04:20		10-01-2091 16:20		11-01-2107 16:20	
10-01-2091 16:20		11-01-2107 16:20		11-01-2126 10:20	
राहु	23-09-2075 08:32	गुरु	27-02-2093 21:08	शनि	14-01-2110 11:23
गुरु	15-02-2078 22:56	शनि	11-09-2095 04:20	बुध	23-09-2112 14:32
शनि	22-12-2080 22:02	बुध	17-12-2097 01:56	केतु	02-11-2113 10:11
बुध	12-07-2083 07:20	केतु	22-11-2098 23:32	शुक्र	02-01-2117 01:11
केतु	29-07-2084 19:38	शुक्र	24-07-2101 23:32	सूर्य	15-12-2117 00:53
शुक्र	30-07-2087 13:38	सूर्य	13-05-2102 04:20	चन्द्र	16-07-2119 08:23
सूर्य	23-06-2088 07:02	चन्द्र	12-09-2103 04:20	मंगल	24-08-2120 04:02
चन्द्र	23-12-2089 04:02	मंगल	18-08-2104 01:56	राहु	01-07-2123 03:08
मंगल	10-01-2091 16:20	राहु	11-01-2107 16:20	गुरु	11-01-2126 10:20

वर्त्तमान दशा

दशा नाम	ग्रह	आरम्भ तिथि	सम्पति तिथि
महादशा	केतु	10-01-2023 16:20	10-01-2030 10:20
अंतर्दशा	मंगल	14-07-2025 20:23	10-12-2025 23:50
प्रत्यंतर दशा	शनि	03-09-2025 19:22	27-09-2025 10:07
सूक्ष्म दशा	चन्द्र	17-09-2025 09:15	19-09-2025 08:28

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

astrorobo.com

योगिनी दशा - I

भ्रामरी (4 वर्ष)

16-11-2011 8:47
16-11-2015 8:47

भ्रामरी	26-4-2012 16:47
भद्रिका	15-11-2012 14:47
उल्का	17-7-2013 2:47
सिद्धि	27-4-2014 4:47
संकटा	17-3-2015 20:47
मंगला	27-4-2015 10:47
पिंगला	17-7-2015 14:47
धान्य	16-11-2015 8:47

भद्रिका (5 वर्ष)

16-11-2015 8:47
16-11-2020 8:47

भद्रिका	27-7-2016 0:17
उल्का	27-5-2017 9:17
सिद्धि	17-5-2018 11:47
संकटा	27-6-2019 7:47
मंगला	17-8-2019 1:17
पिंगला	26-11-2019 12:17
धान्य	26-4-2020 16:47
भ्रामरी	16-11-2020 8:47

उल्का (6 वर्ष)

16-11-2020 8:47
16-11-2026 8:47

उल्का	16-11-2021 14:47
सिद्धि	16-1-2023 17:47
संकटा	17-5-2024 17:47
मंगला	17-7-2024 14:47
पिंगला	16-11-2024 8:47
धान्य	17-5-2025 23:47
भ्रामरी	16-1-2026 11:47
भद्रिका	16-11-2026 8:47

सिद्धि (7 वर्ष)

16-11-2026 8:47
16-11-2033 8:47

सिद्धि	27-3-2028 12:17
संकटा	16-10-2029 16:17
मंगला	26-12-2029 16:47
पिंगला	17-5-2030 17:47
धान्य	16-12-2030 19:17
भ्रामरी	26-9-2031 21:17
भद्रिका	15-9-2032 23:47
उल्का	16-11-2033 8:47

संकटा (8 वर्ष)

16-11-2033 8:47
16-11-2041 8:47

संकटा	27-8-2035 16:47
मंगला	16-11-2035 20:47
पिंगला	27-4-2036 4:47
धान्य	26-12-2036 16:47
भ्रामरी	16-11-2037 8:47
भद्रिका	27-12-2038 4:47
उल्का	27-4-2040 4:47
सिद्धि	16-11-2041 8:47

मंगला (1 वर्ष)

16-11-2041 8:47
16-11-2042 8:47

मंगला	26-11-2041 12:17
पिंगला	16-12-2041 19:17
धान्य	16-1-2042 5:47
भ्रामरी	25-2-2042 19:47
भद्रिका	17-4-2042 13:17
उल्का	17-6-2042 10:17
सिद्धि	27-8-2042 10:47
संकटा	16-11-2042 8:47

astrorobo.com

योगिनी दशा - II

पिंगला (2 वर्ष)

16-11-2042 8:47
16-11-2044 8:47

पिंगला	26-12-2042 22:47
धान्य	25-2-2043 19:47
भ्रामरी	17-5-2043 23:47
भद्रिका	27-8-2043 10:47
उल्का	27-12-2043 4:47
सिद्धि	17-5-2044 5:47
संकटा	26-10-2044 13:47
मंगला	16-11-2044 8:47

धान्य (3 वर्ष)

16-11-2044 8:47
16-11-2047 8:47

धान्य	15-2-2045 16:17
भ्रामरी	17-6-2045 10:17
भद्रिका	16-11-2045 14:47
उल्का	18-5-2046 5:47
सिद्धि	17-12-2046 7:17
संकटा	17-8-2047 19:17
मंगला	17-9-2047 5:47
पिंगला	16-11-2047 8:47

भ्रामरी (4 वर्ष)

16-11-2047 8:47
16-11-2051 8:47

भ्रामरी	26-4-2048 16:47
भद्रिका	15-11-2048 14:47
उल्का	17-7-2049 2:47
सिद्धि	27-4-2050 4:47
संकटा	17-3-2051 20:47
मंगला	27-4-2051 10:47
पिंगला	17-7-2051 14:47
धान्य	16-11-2051 8:47

भद्रिका (5 वर्ष)

16-11-2051 8:47
16-11-2056 8:47

भद्रिका	27-7-2052 0:17
उल्का	27-5-2053 9:17
सिद्धि	17-5-2054 11:47
संकटा	27-6-2055 7:47
मंगला	17-8-2055 1:17
पिंगला	26-11-2055 12:17
धान्य	26-4-2056 16:47
भ्रामरी	16-11-2056 8:47

उल्का (6 वर्ष)

16-11-2056 8:47
16-11-2062 8:47

उल्का	16-11-2057 14:47
सिद्धि	16-1-2059 17:47
संकटा	17-5-2060 17:47
मंगला	17-7-2060 14:47
पिंगला	16-11-2060 8:47
धान्य	17-5-2061 23:47
भ्रामरी	16-1-2062 11:47
भद्रिका	16-11-2062 8:47

सिद्धि (7 वर्ष)

16-11-2062 8:47
16-11-2069 8:47

सिद्धि	27-3-2064 12:17
संकटा	16-10-2065 16:17
मंगला	26-12-2065 16:47
पिंगला	17-5-2066 17:47
धान्य	16-12-2066 19:17
भ्रामरी	26-9-2067 21:17
भद्रिका	15-9-2068 23:47
उल्का	16-11-2069 8:47

astrorobo.com

योगिनी दशा - III

संकटा (8 वर्ष)

16-11-2069 8:47
16-11-2077 8:47

संकटा	27-8-2071 16:47
मंगला	16-11-2071 20:47
पिंगला	27-4-2072 4:47
धान्य	26-12-2072 16:47
भ्रामरी	16-11-2073 8:47
भद्रिका	27-12-2074 4:47
उल्का	27-4-2076 4:47
सिद्धि	16-11-2077 8:47

मंगला (1 वर्ष)

16-11-2077 8:47
16-11-2078 8:47

मंगला	26-11-2077 12:17
पिंगला	16-12-2077 19:17
धान्य	16-1-2078 5:47
भ्रामरी	25-2-2078 19:47
भद्रिका	17-4-2078 13:17
उल्का	17-6-2078 10:17
सिद्धि	27-8-2078 10:47
संकटा	16-11-2078 8:47

पिंगला (2 वर्ष)

16-11-2078 8:47
16-11-2080 8:47

पिंगला	26-12-2078 22:47
धान्य	25-2-2079 19:47
भ्रामरी	17-5-2079 23:47
भद्रिका	27-8-2079 10:47
उल्का	27-12-2079 4:47
सिद्धि	17-5-2080 5:47
संकटा	26-10-2080 13:47
मंगला	16-11-2080 8:47

धान्य (3 वर्ष)

16-11-2080 8:47
16-11-2083 8:47

धान्य	15-2-2081 16:17
भ्रामरी	17-6-2081 10:17
भद्रिका	16-11-2081 14:47
उल्का	18-5-2082 5:47
सिद्धि	17-12-2082 7:17
संकटा	17-8-2083 19:17
मंगला	17-9-2083 5:47
पिंगला	16-11-2083 8:47

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

astrorobo.com

चर दशा

धनु (6 वर्ष)

3-9-2013
3-9-2019

वृश्चिक	3-3-2014
तुला	3-9-2014
कन्या	3-3-2015
सिंह	3-9-2015
कर्क	3-3-2016
मिथुन	3-9-2016
वृष	3-3-2017
मेष	3-9-2017
मीन	3-3-2018
कुम्भ	3-9-2018
मकर	3-3-2019
धनु	3-9-2019

वृश्चिक (5 वर्ष)

3-9-2019
3-9-2024

तुला	3-2-2020
कन्या	3-7-2020
सिंह	3-12-2020
कर्क	3-5-2021
मिथुन	3-10-2021
वृष	3-3-2022
मेष	3-8-2022
मीन	3-1-2023
कुम्भ	3-6-2023
मकर	3-11-2023
धनु	3-4-2024
वृश्चिक	3-9-2024

तुला (11 वर्ष)

3-9-2024
3-9-2035

वृश्चिक	3-8-2025
धनु	3-7-2026
मकर	3-6-2027
कुम्भ	3-5-2028
मीन	3-4-2029
मेष	3-3-2030
वृष	3-2-2031
मिथुन	3-1-2032
कर्क	3-12-2032
सिंह	3-11-2033
कन्या	3-10-2034
तुला	3-9-2035

कन्या (1 वर्ष)

3-9-2035
3-9-2036

तुला	3-10-2035
वृश्चिक	3-11-2035
धनु	3-12-2035
मकर	3-1-2036
कुम्भ	3-2-2036
मीन	3-3-2036
मेष	3-4-2036

सिंह (12 वर्ष)

3-9-2036
3-9-2048

कन्या	3-9-2037
तुला	3-9-2038
वृश्चिक	3-9-2039
धनु	3-9-2040
मकर	3-9-2041
कुम्भ	3-9-2042
मीन	3-9-2043

कर्क (12 वर्ष)

3-9-2048
3-9-2060

मिथुन	3-9-2049
वृष	3-9-2050
मेष	3-9-2051
मीन	3-9-2052
कुम्भ	3-9-2053
मकर	3-9-2054
धनु	3-9-2055

astrorobo.com

वृष	3-5-2036
मिथुन	3-6-2036
कर्क	3-7-2036
सिंह	3-8-2036
कन्या	3-9-2036

मेष	3-9-2044
वृष	3-9-2045
मिथुन	3-9-2046
कर्क	3-9-2047
सिंह	3-9-2048

वृश्चिक	3-9-2056
तुला	3-9-2057
कन्या	3-9-2058
सिंह	3-9-2059
कर्क	3-9-2060

मिथुन (2 वर्ष)

3-9-2060
3-9-2062

वृष (4 वर्ष)

3-9-2062
3-9-2066

मेष (3 वर्ष)

3-9-2066
3-9-2069

वृष	3-11-2060
मेष	3-1-2061
मीन	3-3-2061
कुम्भ	3-5-2061
मकर	3-7-2061
धनु	3-9-2061
वृश्चिक	3-11-2061
तुला	3-1-2062
कन्या	3-3-2062
सिंह	3-5-2062
कर्क	3-7-2062
मिथुन	3-9-2062

मेष	3-1-2063
मीन	3-5-2063
कुम्भ	3-9-2063
मकर	3-1-2064
धनु	3-5-2064
वृश्चिक	3-9-2064
तुला	3-1-2065
कन्या	3-5-2065
सिंह	3-9-2065
कर्क	3-1-2066
मिथुन	3-5-2066
वृष	3-9-2066

वृष	3-12-2066
मिथुन	3-3-2067
कर्क	3-6-2067
सिंह	3-9-2067
कन्या	3-12-2067
तुला	3-3-2068
वृश्चिक	3-6-2068
धनु	3-9-2068
मकर	3-12-2068
कुम्भ	3-3-2069
मीन	3-6-2069
मेष	3-9-2069

मीन (9 वर्ष)

3-9-2069
3-9-2078

कुम्भ (4 वर्ष)

3-9-2078
3-9-2082

मकर (3 वर्ष)

3-9-2082
3-9-2085

मेष	3-6-2070
वृष	3-3-2071
मिथुन	3-12-2071
कर्क	3-9-2072

मीन	3-1-2079
मेष	3-5-2079
वृष	3-9-2079
मिथुन	3-1-2080

धनु	3-12-2082
वृश्चिक	3-3-2083
तुला	3-6-2083
कन्या	3-9-2083

astrorobo.com

सिंह	3-6-2073	कर्क	3-5-2080	सिंह	3-12-2083
कन्या	3-3-2074	सिंह	3-9-2080	कर्क	3-3-2084
तुला	3-12-2074	कन्या	3-1-2081	मिथुन	3-6-2084
वृश्चिक	3-9-2075	तुला	3-5-2081	वृष	3-9-2084
धनु	3-6-2076	वृश्चिक	3-9-2081	मेष	3-12-2084
मकर	3-3-2077	धनु	3-1-2082	मीन	3-3-2085
कुम्भ	3-12-2077	मकर	3-5-2082	कुम्भ	3-6-2085
मीन	3-9-2078	कुम्भ	3-9-2082	मकर	3-9-2085

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

astrorobo.com

कालसर्प दोष

जब किसी व्यक्ति की कुंडली में राहु और केतू ग्रहों के बीच अन्य सभी ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प दोष का निर्माण होता है। क्योकि कुंडली के एक भाव में राहु और दूसरे भाव में केतु के बैठे होने से अन्य सभी ग्रहों से आ रहे फल रुक जाते हैं। इन दोनों ग्रहों के बीच में सभी ग्रह फँस जाते हैं और यह जातक के लिए एक समस्या बन जाती है। इस दोष के कारण फिर काम में बाधा, नौकरी में रुकावट, शादी में देरी और धन संबंधित परेशानियाँ, उत्पन्न होने लगती हैं।

कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नहीं पड़ता। किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर भरपूर असर पड़ता है। इसलिए मात्र कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता कही जायेगी। कालसर्प दोष कुंडली में ख़राब अवश्य माना जाता है किन्तु विधिवत तरह से यदि इसका उपाय किया जाए तो यही कालसर्प दोष सिद्ध योग भी बन सकता है।

अनन्त	कुलिक	वासुकी	शंखपाल
पद्म	महापद्म	तक्षक	कर्कोटक
शंखचूड़	घातक	विषधर	शेषनाग

आपके जन्मपत्रिका में कालसर्पदोष

कालसर्प की उपस्थिति

आपकी जन्मपत्रिका में कालसर्प दोष उदित रूप में विद्यमान है।

आपकी कुंडली में कालसर्प दोष पूर्ण रूप से विद्यमान एवं प्रबल है।

कालसर्प नाम

विषधर

दिशा

पूर्ण उदित

astrorobo.com

कालसर्प दोष फल

आपकी जन्मपत्रिका में शेषनाग नामक कालसर्प योग बन रहा है।
केतु पंचम और राहु ग्यारहवे भाव में हो तो विषधर कालसर्प योग बनाते हैं। जातक को ज्ञानार्जन करने में आंशिक व्यवधान उपस्थित होता है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने में थोड़ी बहुत बाधा आती है एवं स्मरण शकित का प्राय: ह्रास होता है। जातक को नाना-नानी, दादा-दादी से लाभ की संभावना होते हुए भी आंशिक नुकसान उठाना पड़ता है। चाचा, चचेरे भाइयों से कभी-कभी मतान्तर या झगड़ा- झंझट भी हो जाता है। बड़े भाई से विवाद होने की प्रबल संभावना रहती है। इस योग के कारण जातक अपने जन्म स्थान से बहुत दूर निवास करता है या फिर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करता रहता है। लेकिन कालान्तर में जातक के जीवन में स्थायित्व भी आता है। लाभ मार्ग में थोड़ा बहुत व्यवधान उपस्थित होता रहता है। वह व्यक्ति कभी-कभी बहुत चिंतातुर हो जाता है। धन सम्पत्ति को लेकर कभी बदनामी की स्थिति भी पैदा हो जाती है या कुछ संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। उसे सर्वत्रा लाभ दिखलाई देता है पर लाभ मिलता नहीं। संतान पक्ष से थोड़ी-बहुत परेशानी घेरे रहती है। जातक को कई प्रकार की शारीरिक व्याधियों से भी कष्ट उठाना पड़ता है।

कालसर्प दोष के उपाय

- कालसर्प दोष निवारण यंत्रा घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।

- हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

- गृह में मयूर (मोर) पंख रखें ।

- शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।

- विद्यार्थीजन सरस्वती जी के बीज मंत्रों का एक वर्ष तक जाप करें और विधिवत उपासना करें।

- राहु की दशा आने पर प्रतिदिन एक माला राहु मंत्रा का जाप करें और जब जाप की संख्या 18 हजार हो जाये तो राहु की मुख्य समिधा दुर्वा से पूर्णाहुति हवन कराएं और किसी गरीब को उड़द व नीले वस्त्रा का दान करें

- महामृत्युंजय मंत्रों का जाप प्रतिदिन 11 माला रोज करें, जब तक राहु केतु की दशा-अंर्तदशा रहे और हर शनिवार को श्री शनिदेव का तैलाभिषेक करें और मंगलवार को हनुमान जी को चौला चढ़ायें।

- शुभ मुहूर्त में सर्वतोभद्रमण्डल यंत्रा को पूजित कर धारण करें।

- श्रावणमास में 30 दिनों तक महादेव का अभिषेक करें।

- एक वर्ष तक गणपति अथर्वशीर्ष का नित्य पाठ करें।

- श्रावण के महीने में प्रतिदिन स्नानोपरांत 11 माला 'नम: शिवाय' मंत्रा का जप करने के उपरांत शिवजी को बेलपत्रा व गाय का दूध तथा गंगाजल चढ़ाएं तथा सोमवार का व्रत करें।

astrorobo.com

मांगलिक दोष क्या होता है

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आदि में मंगल ग्रह, लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

कुण्डली में जब लग्न भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव में मंगल स्थित होता है तब कुण्डली में मंगल दोष माना जाता है। सप्तम भाव से हम दाम्पत्य जीवन का विचार करते हैं। अष्टम भाव से दाम्पत्य जीवन के मांगलीक सुख को देखा जाता है। मंगल लग्न में स्थित होने से सप्तम भाव और अष्टम भाव दोनों भावों को दृष्टि देता है। चतुर्थ भाव में मंगल के स्थित होने से सप्तम भाव पर मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पड़ती है। द्वादश भाव में यदि मंगल स्थित है तब अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है।

मूल रूप से मंगल की प्रकृति के अनुसार ऐसा ग्रह योग हानिकारक प्रभाव दिखाता है, लेकिन वैदिक पूजा-प्रक्रिया के द्वारा इसकी भीषणता को नियंत्रित कर सकते है। मंगल ग्रह की पूजा के द्वारा मंगल देव को प्रसन्न किया जाता है, तथा मंगल द्वारा जनित विनाशकारी प्रभावों, सर्वारिष्ट को शांत व नियंत्रित कर सकारात्मक प्रभावों में वृद्धि की जा सकती है।

लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे |
शुभ दृग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम् ||

मांगलिक विश्लेषण

कुल मांगलिक प्रतिशत	19.25%

मांगलिक फल

कुंडली में मांगलिक दोष है परन्तु मांगलिक दोष का प्रभाव बहुत कम होने से किसी हानि की अपेक्षा नहीं है । कुछ साधारण उपायो की मदद से इसे और कम किया जा सकता है।

astrorobo.com

मांगलिक विश्लेषण - II

भाव के आधार पर

केतु आपके कुंडली में पंचम भाव में है।

अष्टम भाव में मंगल अवस्थित है।

दृष्टि के आधार पर

सप्तम भाव राहु से दृष्ट है।

शनि , आपके कुंडली के अष्टम भाव को देख रहा है।

शनि , आपके कुंडली के पंचम भाव को देख रहा है।

राहु , आपके कुंडली के पंचम भाव को देख रहा है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को शनि देख रहा है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को केतु देख रहा है।

मंगल की दृष्टि आपके कुडंली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

मांगलिक दोष के उपाय

- चांदी की चौकोर डिब्बी में शहद भरकर हनुमान मंदिर या किसी निर्जन वन, स्थान में रखने से मंगल दोष शांत होता है |

- मंगलवार को सुन्दरकाण्ड एवं बालकाण्ड का पाठ करना लाभकारी होता है |

- बंदरों व कुत्तों को गुड व आटे से बनी मीठी रोटी खिलाएं |

- मंगल चन्द्रिका स्तोत्र का पाठ करना भी लाभ देता है |

- माँ मंगला गौरी की आराधना से भी मंगल दोष दूर होता है |

- कार्तिकेय जी की पूजा से भी मंगल दोष के दुशप्रभाव में लाभ मिलता है |

- मंगलवार को बताशे व गुड की रेवड़ियाँ बहते जल में प्रवाहित करें |

- मंगली कन्यायें गौरी पूजन तथा श्रीमद्भागवत के 18 वें अध्याय के नवें श्लोक का जप अवश्य करें |

astrorobo.com

पितृ दोष फल

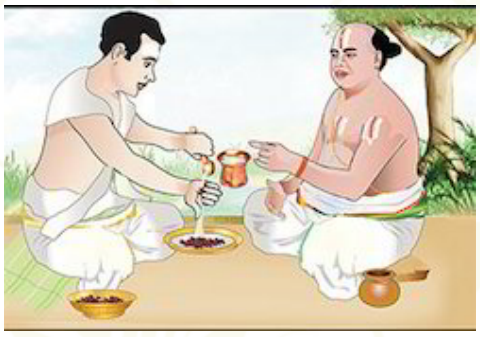

पितृ दोष क्या होता है ?

पितृ दोष पूर्वजों की एक कार्मिक ऋण है और ग्रहों के संयोजन के रूप में जन्म कुंडली में परिलक्षित होता है। यह पूर्वजों की उपेक्षा के कारण भी होता है और श्राद्ध या दान या आध्यात्मिक उत्थान का यथोचित प्रबंध न करने के कारण भी पितृ दोष हो सकता है।

पितृ दोष विश्लेषण

क्या पितृ दोष आपकी कुंडली में उपस्थित है ? **हाँ**

आपकी जन्मपत्रिका में पितृ दोष उपस्थित है क्योकि इससे सम्बंधित 1 नियमों का सयोंजन आपकी कुंडली में हो रहा है। पितृ दोष का शमन इसके उपायो को करके किया जा सकता है अतः चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है।

नियम जिनके द्वारा आपकी कुंडली में पितृ दोष की उपस्थिति

- राहु या केतु ग्यारहवें भाव और / या राहु अथवा केतु चन्द्र के साथ चतुर्थ या नवम भाव में स्थित है।

पितृ दोष के प्रभाव

- पितृ दोष के प्रभाव निम्नलिखित है -
- पितृ दोष से परिवार में प्रतिकूल वातावरण पैदा होती हैं।
- यह शादी में देरी होने और असफल विवाह में भी कारण होती है ।
- पितृ दोष भी परिवार में दुर्घटनाओं या अवांछित घटनाओं का कारण बन सकता है।
- इसके साथ शिक्षा के क्षेत्र में देरी या अवरोधों को पैदा कर सकता है या आपको कभी न खत्म होने वाला कर्ज जैसी परिस्थिति में पहुंचा सकता है ।
- विरासत में मिला रोग और लम्बी बीमारी पितृ दोष के बुरे प्रभावों में से एक है।

astrorobo.com

पितृ दोष उपाय

- पितृ दोष शांत करने के उपाय निम्नलिखित है -

- अपने माता -पिता , भाई-बहन की हरसंभव सेवा करे।

- पीपल और बरगद के वृक्ष की पूजा करने से पितृ दोष की शान्ति होती है या पीपल का पेड़ किसी नदी के किनारे लगायें और पूजा करें, इसके साथ ही सोमवती अमावस्या को दूध की खीर बना, पितरों को अर्पित करने से भी इस दोष में कमी होती है या फिर प्रत्येक अमावस्या को एक ब्राह्मण को भोजन कराने व दक्षिणा वस्त्र भेंट करने से पितृ दोष कम होता है

- प्रत्येक अमावस्या को कंडे की धूनी लगाकर उसमें खीर का भोग लगाकर दक्षिण दिशा में पितरों का आव्हान करने व उनसे अपने कर्मों के लिये क्षमायाचना करने से भी लाभ मिलता है

- पितृ दोष निवारण हेतु पितृ पक्ष में त्रिपिंडी श्राद्ध करें।

- ऊँ नवकुल नागाय विद्महे विषदंताय धीमहि तन्नो सर्प प्रचोदयात् – "की एक रुद्राक्ष माला जप प्रतिदिन करें।

- घर एवं कार्यालय, दुकान पर मोर पंख लगावें।

- शनि के दिन ताजी मूली का दान करें। कोयले, बहते जल में प्रवाहित करें।

- सोमवती अमावस्या के दिन पितृ दोष निवारण पूजा करने से भी पितृ दोष में लाभ मिलाता है

- सूर्योदय के समय किसी आसन पर खड़े होकर सूर्य को निहारने, उससे शक्ति देने की प्रार्थना करने और गायत्री मंत्र का जाप करने से भी सूर्य मजबूत होता है

- भगवान शंकर की प्रतिदिन पूजा एवं आराधना करने से भी पितृ दोष की शांति होती है।

astrorobo.com

साढ़ेसाती क्या होता है

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार साढ़े साती तब बनती है जब शनि गोचर में जन्म चन्द्र से प्रथम, द्वितीय और द्वादश भाव से गुजरता है। शनि एक राशि से गुजरने में ढ़ाई वर्ष का समय लेता है इस तरह तीन राशियों से गुजरते हुए यह साढ़े सात वर्ष का समय लेता है जो साढ़े साती कही जाती है। सामान्य अर्थ में साढ़े साती का अर्थ हुआ सात वर्ष छ: मास।

साढ़े साती के समय व्यक्ति को कठिनाईयों एवं परेशानियों का सामना करना होता है परंतु इसमें घबराने वाली बात नहीं हैं। इसमे कठिनाई और मुश्किल हालत जरूर आते हैं परंतु इस दौरान व्यक्ति को कामयाबी भी मिलती है। बहुत से व्यक्ति साढ़े साती के प्रभाव से सफलता की उंचाईयों पर पहुंच जाते हैं। साढ़े साती व्यक्ति को कर्मशील बनाता है और उसे कर्म की ओर ले जाता है। हठी, अभिमानी और कठोर व्यक्तियों से यह काफी मेहनत करवाता है।

क्या आप साढ़ेसाती में है

साढ़ेसाती दोष उपस्थित नहीं है।

नहीं, आप पर इस समय साढ़ेसाती का प्रभाव नहीं है।

विचार करने का दिनाकं	17-9-2025
शनि राशि	मीन
चंद्र राशि	कर्क
वक्री शनि	हाँ

astrorobo.com

साढ़ेसाती विश्लेषण - II

चंद्र राशि	शनि राशि	वक्री शनि	चरण प्रकार	दिनांक	संक्षिप्त विवरण
कर्क	कर्क	--	शिखर प्रारम्भ	13-7-2034	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
कर्क	सिंह	--	अस्त प्रारम्भ	27-8-2036	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
कर्क	कन्या	--	अस्त समाप्त	22-10-2038	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
कर्क	कन्या	हाँ	अस्त प्रारम्भ	5-4-2039	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
कर्क	कन्या	--	अस्त समाप्त	13-7-2039	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
कर्क	मिथुन	--	उदय प्रारम्भ	11-7-2061	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
कर्क	मिथुन	हाँ	उदय समाप्त	13-2-2062	साढ़ेसाती के उदय चरण के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
कर्क	मिथुन	--	उदय प्रारम्भ	7-3-2062	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
कर्क	कर्क	--	शिखर प्रारम्भ	24-8-2063	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
कर्क	कर्क	हाँ	उदय प्रारम्भ	5-2-2064	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
कर्क	कर्क	--	शिखर प्रारम्भ	9-5-2064	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
कर्क	सिंह	--	अस्त प्रारम्भ	13-10-2065	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
कर्क	सिंह	हाँ	शिखर प्रारम्भ	3-2-2066	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
कर्क	सिंह	--	अस्त प्रारम्भ	3-7-2066	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
कर्क	कन्या	--	अस्त समाप्त	30-8-2068	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
कर्क	मिथुन	--	उदय प्रारम्भ	19-9-2090	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
कर्क	मिथुन	हाँ	उदय समाप्त	25-10-2090	साढ़ेसाती के उदय चरण के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
कर्क	मिथुन	--	उदय प्रारम्भ	21-5-2091	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
कर्क	कर्क	--	शिखर प्रारम्भ	2-7-2093	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
कर्क	सिंह	--	अस्त प्रारम्भ	18-8-2095	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
कर्क	कन्या	--	अस्त समाप्त	11-10-2097	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।

astrorobo.com

चंद्र राशि	शनि राशि	वक्री शनि	चरण प्रकार	दिनांक	संक्षिप्त विवरण
कर्क	कन्या	हाँ	अस्त प्रारम्भ	2-5-2098	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
कर्क	कन्या	--	अस्त समाप्त	20-6-2098	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।

astrorobo.com

साढ़े सती उपाय

- साढ़ेसाती के अनिष्ट प्रभावों को काम करने के उपाय निम्नलिखित है -

- साढ़े साती की परेशानी से बचने के लिए नियमित हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए।

- इस ग्रह दशा से बचने के लिए काले घोड़े की नाल की अंगूठी बनाकर उसे दाएं हाथ की मध्यमा उंगली में पहनना चाहिए।

- शनि देव को शनिवार के दिन सरसों का तेल और तांबा भेट करना चाहिए।

- किसी गरीब व्यक्ति को काले कंबल का दान करें।

- शिवलिंग पर काले तिल अर्पित करें और जल चढ़ाएं।

- हर मंगलवार और शनिवार ऊँ रामदूताय नमः मंत्र का जप करें। मंत्र जप की संख्या कम से कम 108 करे।

- धार्मिक आचरण बनाए रखें और किसी का अनादर न करें।

- हर शनिवार को शनि के निमित्त तेल का दान करें। तेल दान करने से पहले तेल में अपना चेहरा देख लेना चाहिए। यह उपाय हर शनिवार किया जाना चाहिए।

- शनि बीज मंत्र - ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः प्रतिदिन 108 बार अवश्य करें

- शनि प्रकोप से मुक्ति के लिए सुंदर काण्ड का नियमित पाठ अवश्य करें।

- रोटी में तेल लगाकर कुत्ते या कौए को खिलाएं।

astrorobo.com

रत्न उपाय विचार

वैदिक ज्योतिष के अनुसार ग्रहों से सूक्ष्म ऊर्जाओं का उत्सर्जन होता है, जिनका हमारी जन्म कुंडली में ग्रहों की स्तिथि के अनुसार, हमारे जीवन पर प्रतिवर्ती हितकारी अथवा अनिष्टकारी प्रभाव पड़ते हैं । प्रत्येक ग्रह का अपना एक अनूठा तत्सम्बन्धित ज्योतिषीय रत्न होता है जो उसी ग्रह के अनुरूप ब्रह्मांडीय वर्ण-ऊर्जा का प्रसार करता है । रत्न सकारात्मक किरणों के प्रतिबिंब या नकारात्मक किरणों के अवशोषण द्वारा अपना कार्य करते हैं । ये रत्न केवल सकारात्मक स्पंदनों को ही शरीर में प्रवेश करने देते हैं; इस कारण उपयुक्त रत्न पहनाने से उसके धारण कर्ता पर सम्बंधित ग्रह के लाभदायक प्रभाव को बढ़ाया जा सकता है ।

जीवन रत्न

पुखराज

लग्न, शरीर और शरीर से संबंधित सभी बातों का - जैसे स्वास्थ्य, दीर्घायु, नाम, प्रतिष्ठा, जीवन-उद्देश्य आदि का प्रतीक होता है। संक्षेप में, इस में पूरे जीवन का सार समाया है । इसलिए लग्न के स्वामी अर्थात लग्नेश से संबंधित रत्न को जीवन रत्न कहा जाता है । इस रत्न के गुणों तथा शक्तियों का पूरा लाभ उठाने के लिए इसे आजीवन पहना जा सकता है और पहनना भी चाहिए ।

कारक रत्न

मूंगा

जन्म कुंडली का पंचम भाव भी एक शुभ भाव है। पांचवा भाव बुद्धि, उच्च शिक्षा, संतान, अप्रत्याशित धन-प्राप्ति आदि का द्योतक है। इस भाव को 'पूर्व पुण्य कर्मों' का अर्थात पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों का स्थान भी माना जाता है । इसी कारण इसे शुभ भाव कहते हैं । पंचम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को कारक रत्न कहा जाता है।

भाग्य रत्न

माणिक्य

जन्म-कुंडली के नवम भाव को भाग्य या प्रारब्ध का स्थान कहा जाता है । यह भाव भाग्य, सफलता, ज्ञान, गुणदोष और उपलब्धियों आदि का द्योतक है । यह भाव व्यक्ति द्वारा पिछले जन्मों में किए गए अच्छे कर्मों के कारण प्राप्त होने वाले फल स्वरूप आनंद की ओर संकेत करता है । नवम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को भाग्य रत्न कहते हैं । इस रत्न को धारण करने से भाग्य में वृद्धि होती है ।

astrorobo.com

जीवन रत्न - पुखराज

विकल्प	टोपाज	दिन	गुरुवार
उंगली	तर्जनी	अधिदेवता	गुरु
भार	4 - 5.25 कैरेट	धातु	स्वर्ण

विवरण

पुखराज रत्न का स्वामी ग्रह बृहस्पति (गुरु) है । शुद्ध पुखराज दोषरहित , चमकदार, दीप्तिमान, स्पर्श करने में चिकना और उत्तम वर्ण का होता हैं । पुखराज धारण करने से अच्छे स्वास्थ्य, ज्ञान, संपत्ति, दीर्घायु, नाम, सम्मान और यश की प्राप्ति होती है । यह बुरी आत्माओं के कुप्रभाव से भी रक्षा करता है ।

भार व धातु

पुखराज का वजन ३ कैरेट से अधिक होना चाहिए; परंतु ६, ११ अथवा १५ कैरेट का न हो इस बात का ध्यान रखें । इसे सोने की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

पुखराज रत्न को चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी गुरुवार की सुबह धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । पुखराज धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः

प्राण प्रतिष्ठा

पुखराज की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, पुखराज को दाहिने हाथ की अनामिका (रिंग फिंगर) में धारण करें ।

विकल्प

पुखराज के स्थान पर पीला मोती, पीला जिक्रोन, पीली तूरमली, टोपाज़ और सिट्रीन (क्वार्ट्ज टोपाज़) जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि पुखराज को हीरे, नीलम, गोमेद और लहसुनिया के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

astrorobo.com

कारक रत्न - मूंगा

विकल्प	लाल सुलेमानी	दिन	मंगलवार
उंगली	तर्जनी	अधिदेवता	मंगल
भार	6 - 10.25 कैरेट	धातु	स्वर्ण

विवरण

लाल मूंगा का स्वामी ग्रह मंगल है । लाल मूंगा व्यक्ति को साहसी बनाता है और उसकी अपने दुश्मनों को पछाड़ने में सहायता करता है । लाल मूंगा दुष्ट आत्माओं, जादू-टोना और बुरे स्वप्नों से बचाता है ।

भार व धातु

लाल मूंगा का वजन ६ कैरेट से अधिक होना चाहिए । इसे सोने और तांबे के मिश्रण से बनी अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

लाल मूंगा रत्न चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी मंगलवार को सूर्योदय के एक घंटे बाद धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । लाल मूंगा धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

लाल मूंगा की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, लाल मूंगे की अंगूठी को दाहिने हाथ की अनामिका (रिंग फिंगर) में धारण करें ।

विकल्प

लाल मूंगा के स्थान पर संग मुंगी (संग-सितारा), कार्नेलियन और रेड जास्पर (सूर्यकांत मणि) जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि लाल मूंगे को पन्ना, हीरा, नीलम, गोमेद, लहसुनिया और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

astrorobo.com

भाग्य रत्न

भाग्य रत्न - माणिक्य

विकल्प	लाल गार्नेट	दिन	रविवार
उंगली	अनामिका	अधिदेवता	सूर्य
भार	3 - 4.25 कैरेट	धातु	स्वर्ण

विवरण

माणिक रत्न का स्वामी ग्रह सूर्य है । शुद्ध माणिक दोषरहित , चमकदार, दीप्तिमान, स्पर्श करने में चिकना और उत्तम वर्ण का होता हैं । माणिक धारण करने से उत्तम धन और संपत्ति की प्राप्ति होती है । इससे इच्छा शक्ति और आत्मा को प्रबलता मिलती है । माणिक धारण करने वाला व्यक्ति भाग्यशाली होता है और समाज में उच्च तथा प्रतिष्ठित पद पर विराजमान होता है।

भार व धातु

वजन में कम से कम २ -१/२ कैरेट का दोषरहित माणिक पहना जाना चाहिए । सोने और तांबे के मिश्रण से बनी अंगूठी में रत्न को जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

माणिक रत्न को चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी रविवार को सूर्योदय के बाद धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । माणिक धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ सूर्याय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, माणिक को अनामिका (रिंग फिंगर) में धारण किया जा सकता है ।

विकल्प

माणिक के स्थान पर लाल स्पिनेल, स्टार रूबी, पाइरप गार्नेट(तामड़ा), लाल ज़िर्कन या लाल तूरमली जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि माणिक को हीरा, नीलम, गोमेद, लहसुनिया और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

astrorobo.com

आठ मुखी रुद्राक्ष

आपको आठ मुखी रुद्राक्ष को धारण करने की सलाह दी जाती है।

यह धारक को सभी प्रकार की योग्यता प्रदान करता है – रिद्धियाँ तथा सिद्दियाँ तथा उसे शिवलोक की ओर ले जाता है। उसके विरोधियों का नाश हो जाता है अर्थात उसके विरोधियों की मानसिक स्थिति बदल जाती है। यह माना जाता है कि, आठ मुखी रुद्राक्ष लोगों को आठों दिशाओं से ख्याति प्राप्त करने में मदद करता है। आठ मुखी रुद्राक्ष का प्रभाव ऐसे होता है कि यह पहननेवाले को दुर्घटना से बचाता है और दुश्मन के खिलाफ लड़ाई जीतने में हमेशा मदद करता है। यह मणि राहू के दोषयुक्त प्रभाव का असर ख़तम करता है। आत्माओं के क्लेश, बुरे सपने दिखानेवाले आघात, त्वचा रोग, तनाव और चिंता जैसे रोगों में भी यह काफी मददगार साबित होता है।

astrorobo.com

शुभाशुभ अंक

9	3	5
भाग्यांक	मूलांक	नामांक

आपका नाम	Ojas
जन्म दिनांक	3-9-2013
मूलांक	3
मूलांक स्वामी	गुरु
मित्र अंक	7,5,6,9
सम अंक	1,2
शत्रु अंक	4,8
शुभ दिन	मंगलवार, गुरूवार, शुक्रवार
शुभ रत्न	पीला नीलम
शुभ उपरत्न	पुखराज, पीला तुरमली
शुभ देवता	विष्णु
शुभ धातु	सोना
शुभ रंग	पीला
शुभ मंत्र	|| ओम ह्रिंग गुरवे नमः ||

astrorobo.com

आपके बारे में

आपका मूलांक तीन हैं । मूलांक तीन का स्वामी गुरु है । गुरु ग्रह के प्रभाववश आप अनुशासन के मामले में काफी कठोर रहेंगे तथा अपने अधीनस्थों से सख्ती से कार्य लेंगे । काम में ढील या शिथिलता बर्दाश्त नहीं करेंगे । इस कारण कभी कभी आपके मातहत ही आपसे शत्रुता करने लगेंगे। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे और दूसरों पर शासन करने की आपकी सहज इच्छा रहेगी । गुरु ग्रह के प्रभाववश आपकी विचारधारा धार्मिक रहेगी तथा विद्या, अध्ययन, अध्यापन, बौद्धिक स्तर क कार्य तथा धर्म - कर्म के क्षेत्र में आपको अच्छी उपलब्धियाँ एवं ख्याति प्राप्त होगी। मानसिक रूप से आप काफी संतुलित एवं विकसित व्यक्ति होंगे तथा किसी भी विषय को समझने की आप में विशेष क्षमता रहेगी। तर्क एवं ज्ञान शक्ति आपकी अच्छी रहेगी। आप मन से किसी का भी अहित नहीं करेंगे और दूसरों की भलाई करने में भी अपना समय देते रहेंगे। दान - पुण्य के कार्य भी आप काफी करेंगे। सामाजिक स्थिति आपकी काफी अच्छी रहेगी। समाज में आप अग्रणी एवं मुखिया पद का निर्वहन करना अधिक पसंद करेंगे। दूसरों को सच्ची सलाह देना आप अपना धर्म समझेंगे। स्वभाव से आप शांत, कोमल, ह्रदय, मृदुवाणी एवं सत्यवक्ता होंगे। सत्य के मार्ग पर आप चलते हुए कष्टों को भी सहन करेंगे एवं अंत में विजयश्री को प्राप्त करेंगे। स्वास्थ्य आपका साधारणतः अनुकूल ही रहेगा | लेकिन कभी - कभी मंदाग्नि, जठराग्नि, उदार विकार इत्यादि रोगों का सामना करना पड़ेगा।

शुभ व्रत समय

बृहस्पतिवार को बृहस्पति अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। बृहस्पतिवार को पीले वस्त्र धारण कर व्रत करें। पीला भोजन ग्रहण करें एवं पीले पदार्थों का दान करें। यह व्रत तीन वर्ष, एक वर्ष या सोलह बृहस्पतिवारों को करें। यथाशक्ति पुत्रजीवी की माला पर गुरु मंत्र का जप करें।

astrorobo.com

शुभ देवता

आप बृहस्पति ग्रह की उपासना करें अथवा विष्णु भगवान की आराधना करें। भगवान विष्णु के द्वादशाक्षरी मंत्र ' ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णमासी के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगे तो इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों और समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान विष्णु के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

शुभ गायत्री मंत्र

आपके लिए गुरु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु गुरु के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा। गुरु गायत्री मंत्र - ||ॐ अंगिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्त।|

शुभ ध्यान समय

प्रातः काल उठ कर गुरु का ध्यान करें, मन में गुरु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात निम्न मंत्र का पाठ करें। देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।

astrorobo.com

शुभ मंत्र

अशुभ गुरु को अनुकूल बनाने हेतु गुरु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ आठ माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे। ||ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः। जप संख्या 10000||

आपके के लिए शुभ समय

सूर्य 21 नवंबर से 20 दिसंबर तक धनु राशि में एवं 19 फरवरी से 20 मार्च तक मीन राशि में तथा 21 जून से 20 जुलाई तक कर्क राशि में पाश्चात्य मत से रहता है। भारतीय मत से यह 15 दिसंबर से 13 जनवरी तक धनु में एवं 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन में तथा 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। धनु एवं मीन राशियां गुरु का स्वस्थान अथवा अपना घर है। कर्क राशि गुरु का उच्च स्थान है। अतः उपर्युक्त समय में मूलांक तीन प्रभावियों के लिए सबसे अधिक प्रभावकारी एवं लाभप्रद समय रहता है। इस काल में कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य इत्यादि करना आपके लिए विशेष योगकारक रहेगा।

astrorobo.com

शुभ वास्तु

आपके लिए ऐसे मकान में रहना शुभ रहेगा जिसका मूलांक या नामंक 3 हो। ईशान कोण दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। अतः आप शहर की ईशान कोण दिशा में अपना निवास बना सकते हैं। इस दिशा में रोजगार - व्यापार संबंधी कार्य करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय भूरा, पीला, सुनहरी रंगों के होने से आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा और यदि आप दीवारें, पर्दे, फर्नीचर का रंग भी ऐसा ही रखें तो आपके पारिवारिक वातावरण में खुशहाली आएगी।

astrorobo.com

लग्न फल - धनु

स्वामी	गुरु
प्रतीक	धनुष
विशेषताएँ	अग्नि तत्त्व, द्विस्वभाव, पूर्व
भाग्यशाली रत्न	माणिक्य
व्रत का दिन	गुरुवार

देहं रूपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम् |
सुखं दुःखं स्वभावञ्च लग्नभावान्निरीक्षयेत ||

धनु लग्न के व्यक्ति आदर्शवादी महत्वाकांक्षी, उत्साही, धार्मिक या नास्तिक, दूर के स्थानों और संस्कृतियों या विचारों में रूचि रखने वाले,, शारीरिक रूप से सक्रिय, जोखिम लेने वाले , पर्यटनशील , प्रसन्नचित्त , बहिर्मुखी, दार्शनिक, कदाचित सिद्धांतवादी, पूर्वाग्रही,सतही ,अच्छे अवसरों की तलाश में और अत्यधिक सक्रिय रहने वाले होते हैं ।

धनु, लग्न की छवि आधे मानव आधे जानवर की है और शायद आप का स्वभाव भी वैसा है । आप अति महत्वाकांक्षी है, तथापि आपका स्वभाव सबसे अनियंत्रित इच्छा प्रकृति का हो सकता है। आप जीवन में अपना लक्ष्य या तो बहुत ऊंचा रखेंगे या अधम कार्य भी कर सकते हैं।

> " पशुओं से प्रेम ,मैदानी खेल,खेलकूद , जुआ, साहसिक कार्यों में, और यात्रा में आपकी रूचि रहेगी । आप में एकाग्रता की कमी हो सकती है। आपके परिचित शायद बहुत से होंगे लेकिन दोस्त उनमें से कुछेक ही होंगे ।

आपका रुझान गहराई के रिश्तों की अपेक्षा अनौपचारिक संपर्क बनाने में रहेगा । आप बहुत अधिक अधीर स्वभाव के हैं और सदैव गतिमान रहना पसंद करते हैं ।

आप हमेशा अच्छे अवसरों की तलाश में रहते हैं,लेकिन ना कभी रुकते हैं ना धीरे चलते हैं और ना ही अपने आसपास देखते हैं । धनु लग्न के व्यक्ति मुखर होते हैं और स्पष्ट सीधी बात करते हैं ।

astrorobo.com

आप की स्पष्टवादिता वजह से आप में निपुणता और कूटनीति की कमी हो सकती है। अवधारणाओं को आप बहुत बहुत महत्व देते हैं। आप आम तौर पर परिस्थिति की पूर्णता को पसंद करते है और हर तरह की कम जानकारी आपको नापसंद हैं।

> "आप वादे बहुत करते हैं लेकिन उन्हे पूरा करने के इरादे आप के मन में कम हो सकते है। आप या तो जीवन में बहुत ऊँचाईयों को छुएंगे या पतन की राह पर भी जा सकते हैं । आप इनमे से क्या चुनेंगे ? बृहस्पति धनु लग्न का स्वामी है अतः बृहस्पति आपकी कुंडली में महत्वपूर्ण होगा ।

ॐ

सीखने के लिए आध्यात्मिक सबक

संयम,जो भी सामने आये(और इसमे विलम्ब ना करें)

सकारात्मक लक्षण

क्रियाशील | प्रसन्नचित | मानवीय | भगवान से डरने वाले

नकारात्मक लक्षण

चंचल | अनिर्णायक | उद्विग्न | बेपरवाह

astrorobo.com

आपकी कुंडली में ग्रहों का विश्लेषण

ज्योतिष के अनुसार सूर्य को सबसे शक्तिशाली ग्रह माना जाता है, यह जीवन का स्रोत है।सूर्य को स्वास्थ्य, जीवन शक्ति, ऊर्जा, शक्ति, पिता, सम्मान, प्रतिष्ठा, गौरव, प्रसिद्धि, साहस और व्यक्तिगत शक्ति काकारक कहा जाता है।

आपकी कुंडली में सूर्य ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
सिंह	16:58:37	पूर्व फाल्गुनी - 2
स्वामी	**भाव में**	**अस्त/अवस्था**
नौवां भाव	नौवां भाव	नहीं / युवा

सूर्य आपकी कुंडली मे योगकारक है

आपके जन्मपत्रिका में सूर्य नौवां भाव में एवं सिंह राशि में स्थित है।

आप उच्च आदर्शोंवाले, सहनशील, साहसी और जिज्ञासु व्यक्ति हैं . आप एक सदाचारी और तपस्वी प्रवृति के मनुष्य हैं . आप का स्वभाव सीधा और स्पष्ट हैं और आप दिखावे के भीतर छिपी सच्चाई की तह तक पहुँचने की क्षमता रखते हैं . आप के उद्देश्य बुलंद और महान हैं, लेकिन व्यावहारिकता में कमी हो सकती है. आध्यात्मिक और धार्मिक गतिविधियों में गहरी रुचि है. कानून, धर्म और दर्शन स्वाभाविक अभिरुचि के विषय हैं. आपका अंतरमन अत्यधिक विकसित है

> " आप सत्य और न्याय के प्रेमी हैं

आपका दिमाग तेज है और आप अपने जीवन के लक्ष्यों के विषय में स्पष्ट हैं. आप में अपने आसपास की दुनिया को समझने की गहरी अभिलाषा है. जीवन और जीवन की घटनाओं के अर्थ को खोजने की तीव्र इच्छा हैं. आप में विभिन्न संस्कृतियों और दृष्टिकोण को प्रत्यक्ष रूप से समझने और जानने की व विश्वभर में भ्रमण करने की गहन आकांक्षा है. आप का विदेशी भाषाओं और विदेशी संस्कृति की ओर काफी रुझान है. विदेश में जन्मे व्यक्ति या विदेश में यात्रा करते समय मिले किसी व्यक्ति से विवाह होने की संभावना है. संभव हैं कि आप अपना धर्म भी बदल लें

आप एक उपदेशक, शिक्षक, दार्शनिक, पुजारी, आध्यात्मिक मार्गदर्शक, आदि की भूमिका के लिए पूरी तरह से उपयुक्त हैं . आप को स्वयं के व्यावसायिक

astrorobo.com

उपक्रमों में कई बाधाओं का सामना करना पड़ता हैं परन्तु दूसरों के धन का आनंद और लाभ आप को प्राप्त होता हैं . आप निरंतर परेशानियों और चिंताओं का जीवन जीते हैं. आप दिखावटी, अहंकारी और एक अवसरवादी भी हो सकते हैं. कभी-कभी आप अति विश्वासी, अड़ियल या आक्रामक भी हो जाते हैं .आप को उपहार या दान के रूप में चांदी या चांदी के सामान को कभी स्वीकार नहीं करना चाहिए और जहां तक संभव हो चांदी का दान करना चाहिए

सूर्य मंत्र	**॥ ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः ॥**

astrorobo.com

चंद्रमा में मन, शक्ति और भावनाओं को प्रभावित करने की क्षमता है। चंद्रमा पानी और प्राकृतिक शक्तियों से जुड़ा हुआ है,यह एक ढुलमुल ग्रह है जो परिवर्तनों से संबंधित है। चंद्रमा भावनाओं, कल्पना, माता, हृदय, स्मृति, नींद, यात्रा, इच्छा, बचपन, बुद्धि से सम्बंधित है। चंद्रमा व्यक्ति कीइच्छाओं और पसंद से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में चन्द्र ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **कर्क**	अंश **22:39:52**	नक्षत्र **अश्लेषा - 2**
स्वामी **आठवाँ भाव**	भाव में **आठवाँ भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / कुमार**

चन्द्र आपकी कुंडली मे सम है

आपके जन्मपत्रिका में चन्द्र आठवाँ भाव में एवं कर्क राशि में स्थित है।

आप सबसे अधिक अपनी भावनात्मक तीव्रता के लिए जाने जाते हैं. आप कोई भी कार्य कभी भी अधूरा नहीं करते हैं ; या तो सब कुछ या कुछ भी नहीं है - यही आप का सिद्धांत हैं . आप के मन में दूसरों के प्रति कर्तव्य और दायित्व की दृढ़ भावना है. आप बहुत ज्यादा गंभीर हैं और जीवन के बारे में चिंता करते हैं . आप अंदर से काफी नाजुक हैं. आप जीवन भर सुरक्षा तलाशते रहते हैं जिसके लिए आप कठिन परिश्रम भी करते हैं . भय और चिंता आप को अधिक ईमानदार और दृढ़ संकल्पी बनाते हैं . आत्मविश्वास के बल पर आप वास्तव में सराहनीय ऊंचाइयों तक पहुंच सकते हैं. अस्थिरता आपकी विफलताओं का मुख्य कारण होती हैं . धैर्य और सब्र रखें

> " अधिकतर आप उदासीन और आत्मविश्लेषी रहते हैं

आप बहुत संवेदनशील हैं और गैर-भौतिक वास्तविकता और अनुभावों में गहरी रुचि रखते हैं. आप गुप्त ज्ञान को प्राप्त करने और सभी छिपे पहलुओं की खोज की ओर प्रवृत्त रहते हैं . आप मृत्यु के बाद जीवन से संबंधित मामलों में रुचि रखते हैं . आपका मन अधोलोक में डूबा रहता है . लोगों को आपका व्यवहार

astrorobo.com

बाध्यकारी या जुनूनी लग सकता है. आपका मन हमेशा कुछ गहरे की तलाश में रहता हैं . भावनाओं में तेजी से उतार चढ़ाव आते रहते हैं .सामाजिक और मानवीय गतिविधियों की ओर आपका रुझान है. आप खनन और तेल उद्योग में सफल हो सकते हैं . आप अनुसंधान और अन्वेषक कार्यों के लिए बहुत ही उपयुक्त हैं

आप को वैवाहिक संबंधों से और विरासत से लाभ प्राप्त होगा . वित्तीय मामलों में उतार-चढ़ाव बना रहेगा. मां से संबंध अच्छे नहीं रहेंगें . मां के साथ कुछ गहरे मतभेद हो सकते हैं. परिवार के सदस्यों तथा सहयोगियों के साथ मन मुटाव और झगड़ें होने की संभावना है . किसी के प्रति सशक्त भावनायें उस पर हावी होने की तीव्र इच्छा या जलन पैदा कर सकती हैं.नाग, सांप और अन्य प्रकार के रेंगने वाले जंतुओं से भय बना रहेगा . गैर कानूनी और अवैध कामों से दूर रहें . दूसरों के साथ छल न करें . बुजुर्गों का आशीर्वाद लें

चंद्र मंत्र	**॥ ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः ॥**

astrorobo.com

♂ ज्योतिष के अनुसार मंगल ग्रह हिम्मत और तानाशाही से सम्बंधित है। मंगल ग्रह को कार्य और विस्तार का ग्रह माना जाता है। मंगल, शक्ति, साहस, क्रोध, दुश्मन, हिंसा, छोटे भाई, बल, मांसपेशियों और वीरता से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में मंगल ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
कर्क	09:57:44	पुष्य - 2
स्वामी	**भाव में**	**अस्त/अवस्था**
पाँचवा ,बारहवां भाव	आठवाँ भाव	नहीं / वृद्ध

मंगल आपकी कुंडली मे योगकारक है

आपके जन्मपत्रिका में मंगल आठवाँ भाव में एवं कर्क राशि में स्थित है।

तर्क-वितर्क और बहसबाज़ी से बचने का प्रयास करें. नेत्रहीन लोगों के लिए दान करें . आपकी उपचार या सर्जरी में रुचि हो सकती है. विवाह या विरासत धन लाभ के माध्यम बन सकते हैं . व्यावसायिक साझेदार के कारण वित्तीय समस्याएं आ सकती हैं . आप व्यावसायिक क्षेत्र में तो कामयाब होंगें; लेकिन रिश्तों में पर्याप्त संतुष्टि नहीं मिल पायेगी

> " आप चिकित्सा, कानून और वित्त से जुड़े क्षेत्रों में सफल रहेंगें

आपके निजी जीवन में प्रेम और स्नेह में की कमी हो सकती है . आपको अपनी कामुक इच्छाओं और अशिष्ट प्रकृति पर नियंत्रण रखना सीखना होगा . आप पैतृक संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं . आप भू संपत्ति से धन अर्जित करेंगे. आप को कानूनी मामलों में भी जीत हासिल होगी

आप रक्त रोग, मधुमेह और बवासीर आदि समस्याओं से पीड़ित हो सकते है. गठिया और हड्डियों की बीमारियों भी मुसीबत बन सकती हैं .आप को चांदी की चेन पहननी चाहिए. पवित्र स्थानों पर जरूरतमंद लोगों को चावल, चना दाल और गुड़ दान करें . दक्षिण दिशा में दरवाजे पर चौकोर आकार का चांदी का एक टुकड़ा लटका दें

astrorobo.com

मंगल मंत्र	॥ ॐ हूं श्रीं भौमाय नमः ॥

astrorobo.com

बुध बुद्धि और शिक्षा का ग्रह है, यह भाषण और तर्क से सम्बंधित है और इस प्रकार व्यक्ति के संचार कौशल पर इसका प्रभाव पड़ता है। बुध स्मृति, भाषण, राजनीति, व्यापार और व्यापार, मित्रों, मामा, चाचा, भतीजे, दत्तक पुत्र और तर्क से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में बुध ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **सिंह**	अंश **25:42:25**	नक्षत्र **पूर्व फाल्गुनी - 4**
स्वामी **सातवाँ ,दसवां भाव**	भाव में **नौवां भाव**	अस्त/अवस्था **हाँ / मृत**

बुध आपकी कुंडली मे हानिप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में बुध नौवां भाव में एवं सिंह राशि में स्थित है।

आप बहुत सोचते हैं और हमेशा गहरे विचार में रहते हैं . आप को जीवन में परिवर्तन पसंद है . आप गूढ़ कलाओ में रुचि रखते हैं. आप एक प्रभावशाली वक्ता भी हैं. आप को दूसरों की गतिविधियों में हस्तक्षेप करने की आदत है . आप में ज्ञान पाने की एक अतृप्त प्यास है . आप दूसरों के साथ विचारों का और दार्शनिक बातों का आदान-प्रदान करना पसंद करते हैं . आप का अनुकूलनीय मन बौद्धिक गतिविधियों, कानून, धर्म या दर्शन जैसे विषयों में दिलचस्पी रखता है . आप में अपने विचारों और विश्वासों को मौखिक रूप से अच्छी तरह व्यक्त करने की क्षमता है . आपको विदेशी यात्रा और संस्कृति पसंद और यह आप के लिए विशेष रूप से विद्वत्ता का स्तोत्र साबित होती हैं

> " आप स्वभाव से बहुत ही तार्किक और जिद्दी हैं

आप विदेशी भाषा में कौशल प्राप्त कर सकते हैं . आप सामान्यतः वैज्ञानिक गतिविधियों में सफल रहेंगें . आप को वैज्ञानिक विषयों पर भाषण देने केलिए विदेशों में निमंत्रित किया जा सकता है . उच्च शिक्षा, अध्यापन, प्रकाशन या विज्ञापन में आपकी रुचि हो सकती है. आप खाने के शौकीन हैं और विशेष कर

astrorobo.com

मिठाई बहुत पसंद है . आप को अपनी जीभ पर नियंत्रण रखना होगा अन्यथा आपके खाने की आदतों के कारण आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है . निरंतर तनाव और परेशानी की वजह से भी आपकी सेहत प्रभावित हो सकती है . काम से संबंधित कई यात्राएं करनी पड़ सकती हैं . आपकी पत्नी सभ्य और शालीन स्त्री होंगी

अपने ससुराल वालों से आपकी अच्छी निभेगी . भाई बहनों के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगें . आप के दिल में गुरु जनों और संत-महात्माओं के लिए विशेष सम्मान है .आप कभी कभी अनावश्यक सलाह देने में जल्दबाज़ी कर जाते हैं और न ही आप हमेशा अपनी कथनी पर अमल करते हैं . निरंतर मानसिक बेचैनी और मानहानि हो सकती है. सभी तथ्यों को जाने बिना कभी भी निर्णय न लें .एक छोटी सी चांदी की डिब्बी में शहद भरकर घर पर रखें . हरे रंग से दूर रहें और किसी भी साधु या फकीर से कभी कोई ताबीज़ न लें . घर पर सूखे फूल और राख मत रखें

बुध मंत्र	॥ ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः ॥

astrorobo.com

बृहस्पति को मंत्रि ग्रह माना जाता है जो ज्ञान, खुशी और अच्छे भाग्य से संबंधित है। बृहस्पति धन, ज्ञान, गुरु, पति, पुत्र, नैतिक मूल्यों, शिक्षा, दादा दादी और शाही सम्मान का कारक है। यह धार्मिक धारणा, भक्ति और लोगो के विश्वास को दर्शाता करता है।

आपकी कुंडली में गुरु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **मिथुन**	अंश **20:21:15**	नक्षत्र **पुनर्वसु - 1**
स्वामी **पहला ,चौथा भाव**	भाव में **सातवाँ भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / वृद्ध**

गुरु आपकी कुंडली मे सम है

आपके जन्मपत्रिका में गुरु सातवाँ भाव में एवं मिथुन राशि में स्थित है।

आप में भरपूर शारीरिक शक्ति, बुद्धि और पौरुष है . एक आकर्षण चरित्र के आलावा आप शांत और सौम्य मानसिक संतुलन के स्वामी हैं . आप अच्छे वक्ता हैं और दूसरों को अपनी वाणी द्वारा आकर्षित करने का सामर्थ्य रखते हैं . आपकी प्रवृत्ति बहुत ही स्नेहशील और अनुकूलनशील है; इसके अलावा जीवन के प्रति आप एक समझदार दृष्टिकोण रखते हैं .आप मेहनती और स्वावलम्बी हैं . आप बैंकिंग, गणित, शिक्षा और प्रकाशन जैसे करिअर के लिए उपयुक्त हैं जहां आप को स्वतंत्र निर्णय लेने के अवसर प्राप्त हो सकें

> " आप ईमानदार और आधुनिक सोच वाले व्यक्ति हैं

उच्च शिक्षा पाने में आपको अड़चनों का सामना करना पड़ सकता है. आप को अनावश्यक यात्राएं करनी पड़ सकती है जिससे समय और धन की बर्बादी होगी .आप एक कीमती खजाने की तरह के रिश्तों को सहेजते और ख्याल रखते हैं . आप अपने पिता के सानिध्य का आनंद कम ही ले पायेंगें . सामान्यतः आपको जीवन में लाभ, अवसर और धन विवाह अथवा साझेदारी के परिणाम स्वरूप प्राप्त होंगें . आप एक ऐसे साथी की अभिलाषा करते हैं जो आपके सपनों को पूरा

astrorobo.com

करने और आगे बढ़ने में मदद करें

संभव है कि आपका जीवनसाथी एक पेशेवर/व्यवसायी हो और आप की तुलना में अधिक समृद्ध हो . आप अपनी पत्नी और बच्चों से बहुत प्यार करते हैं .आप का स्वास्थय उत्तम रहेगा . आप कभी कभी सर्दी, खांसी और गले की समस्याओं से पीड़ित हो सकते हैं . नहाने के पानी में हल्दी या केसर मिलकर नहाएं . घर के अंदर मंदिर रखना निषिद्ध है और न ही घर के अंदर देवताओं की मूर्तियां रखें

गुरु मंत्र	**॥ ॐ ह्रीं क्लीं हूं बृहस्पतये नमः ॥**

astrorobo.com

वीनस कामुक सुख और कामुक आवेगों से सम्बंधित है। चमक और जीवन शक्ति का ग्रह होने के नाते भौतिकवाद और मांस के आनंद को दर्शाता है। वीनस को यौन इच्छाओं (काम), कामेच्छा, पत्नी का महत्व का कारक माना जाता है। यह जुनून, विवाह, लक्जरी लेख, गहने, वाहन, आराम और सुंदरता से संबंधित है।

आपकी कुंडली में शुक्र ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **कन्या**	अंश **26:47:17**	नक्षत्र **चित्रा - 2**
स्वामी **छठा ,ग्यारहवाँ भाव**	भाव में **दसवां भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / बाल**

शुक्र आपकी कुंडली मे हानिप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में शुक्र दसवां भाव में एवं कन्या राशि में स्थित है।

आप बहुत बुद्धिमान और तेजस्वी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हैं. अपने लक्ष्य प्राप्ति हेतु आप अपना सर्वस्व और सर्वोत्कृष्ट प्रयास लगा देते हैं . आप के मनमोहक शिष्टाचार के कारण लोग आप का सम्मान करते हैं . आप दुनिया को प्यारभरी और आशावादी दृष्टिकोण से देखते हैं . आप न्याय, संतुलन और सामंजस्य के समर्थक हैं . आप संपर्क बनाने और सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन करने में निपुण हैं . आपका पुरुषों की तुलना में महिलाओं के साथ अधिक व्यवहार रहता है . समाज में अपनी पहचान बनाये रखना आपके लिए अति आवश्यक है

> " आप में विलक्षण दृष्टि और रचनात्मक गुण हैं

आप निर्णय लेने में बहुत अधीर या अस्थिर हो सकते हैं . मामूली बातों पर भी आप बहुत तेजी से क्रोधित हो जाते हैं . आप कुछ हद तक लोभी और भौतिकवादी हो सकते हैं .आप कला, सौंदर्य उत्पादन, एंटीक्स, इंटीरियर डेकोरेशन, ब्यूटीशियन, मनोरंजन, रंगमंच, चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, वित्तीय प्रबंधन और नियंत्रण जैसे कैरियर के लिए उपुक्त हैं . पुलिस, न्यायाधीश, राजनीतिज्ञ जैसे अन्य प्रभुत्व के पदों की तरफ आप आकर्षित हो सकते हैं . आप एक अच्छे

astrorobo.com

वक्ता या गायक बन सकते हैं . लोगों को रिझाने और प्रेरित करने के लिए आप अपनी आवाज का इस्तेमाल कर सकते हैं . आप की आर्थिक स्तिथि बहुत आरामदायक होगी

अपने मधुर स्वभाव और मैत्रीपूर्ण प्रकृति के कारण आप अपने कैरियर और साधारण जीवन में भी काफी लोकप्रिय हैं . आपके विवाह में देर हो सकती हैं. जब तक आपको अपनी पति/पत्नी का साथ मिलता रहेगा, तब तक सभी प्रकार की मुसीबतों से आप बचें रहेंगें . संतान उत्पत्ति में समस्या हो सकती है. विवाहेतर सम्बन्ध आपके बच्चों के हित के लिए हानिकारक हैं .शराब और मांसाहारी भोजन से दूर रहें . अपने आसपास के परिवेश में पेड़ पौधे लगवाना आपके लिए शुभ होगा . अपनी पत्नी का सम्मान करें

शुक्र मंत्र	**॥ ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः ॥**

astrorobo.com

शनि एक धीमी गति का ग्रह है। इसे न्याय, तर्क और विनाशकारी शक्तियों का ग्रह कहा जाता है। यह आपदाओं और मृत्यु से संबंधित है। शनि को एक शिक्षक के रूप में भी माना जाता है। शनि लंबी उम्र से सम्बंधित है। यह देरी, अवरोध, दु: ख, नुकसान, चोरी, बुढ़ापे, दु: ख, प्रतिकूलता और आजादी सेसम्बंधित है।

आपकी कुंडली में शनि ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **तुला**	अंश **13:17:28**	नक्षत्र **स्वाति - 2**
स्वामी **दूसरा ,तिसरा भाव**	भाव में **ग्यारहवाँ भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / युवा**

शनि आपकी कुंडली मे हानिप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में शनि ग्यारहवाँ भाव में एवं तुला राशि में स्थित है।

आप एक शांत और सहनशील व्यक्ति हैं . आप मुक्त आत्मा हैं; आपको अपने व्यक्तिगतता बहुत प्रिय है . आप की काफी उम्मीदें और सपने हैं और आप अपने निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के प्रति पूर्णतया समर्पित हैं . अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आप कर्तव्यनिष्ठां और जिम्मेदारी से कड़ी मेहनत करते हैं . सहनशीलता और धैर्य आपकी ताकत हैं . कभी कभी आप कुछ हद तक झूठ बोलते हैं और छल भी कर सकते हैं .आप गंभीर या उद्देश्ययुक्त समूहों के प्रति आकर्षित होते हैं . समाज में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है और लोगों के साथ आपके संबंध मधुर ही होते हैं . आप हर आयु समूह के साथ घुल मिल जाने में सक्षम हैं

> " आप काफी बहादुर और समझदार हैं

लोग आप का सम्मान करते हैं . आप के कई परिचित होंगें, लेकिन केवल कुछ ही करीबी मित्र हैं . विपरीत लिंग के लोगों के साथ आप के घनिष्ठ और अंतरंग संबंध हो सकते हैं .आप को जीवन में कई बार नेतृत्व और आधिकारिक पद प्राप्त हो सकते हैं . आप का भविष्य राजनीति और शिक्षण के क्षेत्रों में उज्जवल है .

astrorobo.com

आप टेक्नोलोजी और वित्त से संबंधित काम में सफल हो सकते हैं . आप आंतरिक सजावट, इवेंट मैनेजमेंट, कार डिजाइनिंग, नेटवर्किंग, आदि का व्यवसाय कर सकते हैं . आप जो भी रास्ता चुनते हैं, उसके प्रति बहुत समर्पित रहते हैं

आप को अपने बच्चों के द्वारा और अपनी स्वयं की रचनात्मकता से लाभ होगा.आप के अपने परिवार के सदस्यों के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध होंगें - विशेष रूप से अपने भाईबहनों के साथ . आप को माता पिता की जायदाद विरासत में प्राप्त होगी .आप के अपने परिवार के सदस्यों के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध होंगें - विशेष रूप से अपने भाईबहनों के साथ . आप को माता पिता की जायदाद विरासत में प्राप्त होगी .ठन्डे, तले हुए और गरिष्ठ भोजन और मदिरा से दूर रहें . चरित्र और अंतर्मन को शुद्ध और निष्कलंक रखें . अपने घर को स्वच्छ और हवादार रखें

शनि मंत्र	**॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः ॥**

astrorobo.com

अजीब और अपरंपरागत ग्रह होने के कारण राहु भौतिकवाद से सम्बंधित है और कठोर वाणी, कमी और इच्छा से सम्बंधित है। राहु को ट्रान्सेंडेंटलिज्म का ग्रह कहा जाता है। यह विदेशी भूमि और विदेशी यात्रा से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में राहु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **तुला**	अंश **16:33:07**	नक्षत्र **स्वाति - 3**
स्वामी **दसवां भाव**	भाव में **ग्यारहवाँ भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / युवा**

आपके जन्मपत्रिका में राहु ग्यारहवाँ भाव में एवं तुला राशि में स्थित है।

आप का माथा चौड़ा और आँखें आकर्षक हैं; आपका अंदाज़ राजसी है . आप अपने लिए अपने खुद के नियम बनाते हैं . आप जीवन के लगभग हर पहलू में प्रतिभाशाली और सक्षम हैं . हालांकि आप बहुत बुद्धिमान हैं, आप ज्यादा बातें नहीं करते . आप जब करना चाहे, तब अपनी इच्छाओं और गतिविधियों को नियंत्रित कर सकते हैं . आप अपनी मेहनत के बल पर सफल और धनवान बनेंगें; आप एक अरबपति भी बन सकते हैं . आप ढेर सारे ज्ञान के साथ-साथ नाम और प्रतिष्ठा भी अर्जित करेंगे . आप काफी विदेश यात्राएं भी करेंगें.आप के दिमाग में धन कमाने के अनुठे विचार जन्म लेते रहते हैं

> " आप स्वभाव से ज़िद्दी और दृढ़ हैं

आप दूसरे लोगों के संसाधनों से बहुत सारा पैसा कमा सकते हैं . संभ्रांत वर्ग के साथ आप के अच्छे संबंध रहते हैं; जिसका पूरा पूरा लाभ आप अपने व्यवसाय और सामाजिक पदवी को बढ़ने में उठाते हैं . आप एक मंत्री या उच्च सरकारी पद पर अधिकारी हो सकते हैं . आप पेट्रोलियम, कोयला, तेल तथा अन्य ईंधन के व्यवसायों से बहुत अधिक मुनाफा कमा सकते हैं . ३४ वर्ष तक करियर में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है .महिलाएं आप से बहुत आकर्षित होती हैं; आप के अवैध संबंध भी हो सकते हैं . आप के अपने पिता के साथ रिश्ते कड़वे हो सकते हैं . अच्छे स्वास्थ्य, धन और परिवार की खुशी के लिए यह आवश्यक है कि आप अपने पिता के साथ ही रहें . आप को संतान संबंधित समस्याएं हो सकती हैं

या तो गर्भपात होंगें या आप के अपने बच्चों के साथ ख़राब संबंध हो सकते हैं . आपके कुछ मित्र दुष्ट और धोखेबाज हो सकते हैं.आप कान, गुप्तांग, मूत्राशय और रीढ़ की हड्डी से जुड़ी कुछ स्वास्थ्य समस्याओं का सामना कर सकते हैं . आप श्वास सम्बंधित समस्या, मधुमेह, सीने में दर्द की तकलीफ से पीड़ित हो

astrorobo.com

सकते हैं . रात के समय दूध या दूध से बने उत्पादों का सेवन न करें .शर्त लगाने, लॉटरी या सट्टेबाजी पर पैसे बर्बाद मत करें . उपहार में बिजली के उपकरण कभी न लें . गले में सोना पहनें . धार्मिक स्थान पर नियमित रूप से दान करें

राहु मंत्र	॥ ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः ॥

astrorobo.com

केतु मोक्ष, पागलपन का ग्रह है। यह आध्यात्मिकता से सम्बंधित है। केतु रहस्यमय, भ्रामक, गुप्त और पेचीदा ग्रह है। केतु दर्द, रहस्य, गुप्त विज्ञान, उदासीनता, दर्शन, अलगाव और कारावास का प्रतीक है।

आपकी कुंडली में केतु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
मेष	16:33:07	भरणी - 1
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
चौथा भाव	पाँचवा भाव	नहीं / युवा

आपके जन्मपत्रिका में केतु पाँचवा भाव में एवं मेष राशि में स्थित है।

आप का चेहरा बड़ा मासूम है . आप में अद्वितीय और मनोज्ञ बुद्धिमत्ता है . आप बहुत ही सरल और निष्कपट हैं; आप में व्यावसायिक कौशल की कमी हैं . आप एक बहुत ही मौलिक, लेकिन उद्वेगकर विचारक हैं, जिसके कारण आप दूसरों के लिए परेशानी का कारण बन सकते हैं . लोगों को आपके विचार और मत अक्सर बेबुनियाद लगते हैं. आप में कायरता और अधीरता का एक दूभर मिश्रण हैं . आप में मानसिक अखंडता की कमी हो सकती है . आप बहुत जल्द तड़क-भड़क, विलक्षणता, दिव्यता, रचनात्मक प्रदर्शन, राजनीति, आदि की ओर आकर्षित हो जाते हैं .बचपन में आपका अध्ययन प्रभावित हो सकता है

> " आप एक विचारशील, संतुलित और व्यवस्थित व्यक्ति हैं

आप रोमांस और बच्चों के मामलों में निर्णय लेने में असमर्थ हैं . प्रेम प्रसंग सफल नहीं होंगें . अपितु, आप का वैवाहिक जीवन संतुलित रहेगा . आप को बच्चे के जन्म में देरी या गर्भपात जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है . संतान होने के बाद भी उसके स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दे परेशान कर सकते हैं . आपकी सबसे ज्येष्ठ संतान घर से दूर रह सकती हैं .आप की वित्तीय हालत बहुत अच्छी होगी . करियर आयु के चौबीसवें वर्ष के बाद शुरू होगा . आप कई बार अपने व्यवसाय बदलेंगें

करियर की दृष्टि से आप को प्रदर्शन कला, रंगमंच, अभिनय, कविता, नृत्य, साहित्यिक और रचनात्मक गतिविधियों, प्रकाशन, सट्टा, जुआ, राजनीति, चुनाव, आदि से लाभ होगा . आप बहुत अच्छे उपदेशक बन सकते हैं; आप को तीर्थ यात्रा और विदेश यात्रा करने में रूचि हो सकती है . आप अपने जीवन के उत्तरार्ध में आध्यात्मिक बन सकते हैं .आप के दिल से संबंधित परेशानियों से ग्रस्त होने की संभावना है . हर्निया, अल्सर, कैंसर, अस्थमा और मिर्गी आदि रोगों से आप

astrorobo.com

परेशान रह सकते हैं .दूध और चीनी का दान करें . बुजुर्ग माता तुल्य महिलाओं की देखभाल और सम्मान करें . पितरो का श्राद्ध करें

केतु मंत्र	**॥ ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः॥**

astrorobo.com

उल्का योगिनी दशा

प्रारंभ तिथि:	16-11-2020 11:37
समाप्ति तिथि:	16-11-2026 11:37

उल्का योगिनी दशा की छठी योगिनी दशा है। इसकी अवधि 6 वर्ष की होती है तथा इसके स्वामी "शनि" को माना गया है। उल्का को एक अशुभ दशा माना गया है। शनि की छाया की वजह से इस अवधि को चुनौतीपूर्ण माना गया है तथा इस दौरान आपका जीवन प्रतिकूल दशा में चलने की संभावना है। चूँकि उल्का योगिनी की दशा के साथ उसकी अन्तर्दशा भी आती है इसलिए ये जरुरी नहीं है कि इस पूरी अवधि में आपका समय ख़राब ही चलेगा इस योगिनी की अंतर्दशा की वजह से उसके कुछ अच्छे और अनुकूल परिणाम भी आपको देखने को मिलेंगे। ये दशा हमेशा अशुभ फल ही दे ऐसा जरुरी नहीं है। इस दशा के स्वामी शनि है तो इस दशा में आपके जीवन के विभिन्न पहलुओं में कुछ न कुछ चुनौती का सामना आपको करना ही पड़ेगा। आपके कार्यक्षेत्र में परेशानी आ सकती है। आपके द्वारा किये गए कार्य में देरी हो सकती है या फिर आपने कोई काम बिल्कुल सही ढंग से किया हो सब सही चल रहा हो किन्तु अंतिम समय में कुछ परिस्थिति ऐसी हो जाये जिसकी वजह आपका कार्य बिगड़ सकता है या परिणाम में देरी हो सकती है। ऐसी परिस्थिति में आप अपना धैर्य न खोये और न ही जल्दबाज़ी में कोई फैसला लें। शनि के प्रभाव की वजह से आपका आपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ तनावपूर्ण संबंध हो सकता है इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि आप जितना हो सके गलती करने से बचें। आपके दफ्तर में आपके साथ काम करने वाले सहकर्मी का व्यवहार आपके प्रति बदल सकता है। आपको पहले की तरह सहयोग नहीं भी कर सकते है तो ऐसी परिस्थिति में खुद पर संयम रखें और शांति के साथ उनसे बातचीत करें।

आर्थिक रूप से भी आपको कुछ दिक्कत होने की संभावना है। जहाँ एक तरफ आप धन संचय की योजना बनाने की कोशिश करेंगे वही दूसरी तरफ आपके घर चोरी होने की संभावना हो सकती है।, इसलिए आपको अपने घर में कीमती सामान को सुरक्षित रखना चाहिए।

आपके घर का माहौल उदास हो सकता है जिसका कारण आप और आपके परिवार ही होंगे। आपके बच्चों की तरफ से आपको प्रतिकूल समाचार मिलने की संभावना है जैसे उनके परीक्षा के परिणाम या अनुकूल विद्यालय में नामांकन का न होना इत्यादि। इसके साथ ही आपको अपने और अपने बच्चों तथा माता-पिता की सेहत का भी खास ख्याल रखना चाहिए। आपको अपने रिश्तेदारों के स्वास्थ्य पर भी नज़र रखना चाहिए क्योंकि इस अवधि के दौरान उनकी तरफ से किसी बड़े की मृत्यु की संभावना बन सकती है।

इन तमाम बातों और परिस्थिति को देखते हुए आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपने मन को शांत रखें, किसी भी कार्य में जल्दबाज़ी न करें और अपना धैर्य बनाये रखें।

उपाय

- उल्का महादशा के दौरान 7 और 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करने से आपको लाभ प्राप्त होगा।

उल्का - उल्का दशा

प्रारंभ तिथि:	16-11-2020 11:37
समाप्ति तिथि:	16-11-2021 17:37

astrorobo.com

उल्का योगिनी की पहली अंतर्दशा "उल्का अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 14 महीने तक चलती है। शनि की दशा में शनि की अंतर्दशा होने की वजह से ये समय आपके लिए बहुत कठिन हो सकता है। आपके करियर से लेकर आपके व्यक्तिगत संबंध तक आपको को चुनौती और कई नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। आपके रोजगार के क्षेत्र में आपका काम ढंग से न चलने की संभावना है जिसकी वजह से आपके वरिष्ठ अधिकारी आपके खुश नहीं रहेंगे और आपकी नौकरी जाने की संभावना बन सकती है। नौकरी जाने की वजह से आपको आर्थिक तंगी का सामना भी करना पड़ सकता है।

आपके व्यक्तिगत संबंध भी अच्छे और सुचारु ढंग से नहीं चलेंगे। आपका वैवाहिक जीवन भी सुखद रूप से चलने में परेशानी है, आपका और आपके जीवनसाथी के बीच मतभेद होने की सम्भावना है। आपके परिजन भी आपसे किसी भी कारणवश खुश नहीं रहेंगे। सेहत के मामले की बात करें तो उसमे भी आपको कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपनी सेहत को लेकर थोड़ी भी आशंका होती है तो तुरंत आपको डॉक्टर की सलाह लेनी चाहिए। आपको अपने रिश्तेदारों का भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि इस दौरान आपके रिश्तेदार में मृत्यु की संभावना है। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप इस अवधि के दौरान सचेत रहें और अपनी बुद्धि से काम लें।

उपाय

- शनि की स्थिति को मजबूत करने के लिए कस्तूरी, सेमल के पेड़ की टहनियाँ और सामग्री, बेल के पत्ते या फल, और कैक्टस और गुलाब जैसे कांटेदार पौधों का उपयोग करें। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ शमी/खेजड़ी के पेड़ या सेमल की शाखा, पत्ते या टहनी का भी हवन में उपयोग कर सकते हैं। संकटा तथा उल्का दशा के दौरान उपाय करना आपके लिए लाभकारी सिद्ध होगा।

- उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

उल्का - सिद्धि दशा

प्रारंभ तिथि:	16-11-2021 17:37
समाप्ति तिथि:	16-1-2023 20:37

उल्का योगिनी की दूसरी अंतर्दशा "सिद्धा अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 16 महीनों की होती है तथा इसके स्वामी "शुक्र" को माना गया है। शनि और शुक्र की मिलीजुली प्रभाव की वजह से इस अन्तर्दशा का प्रभाव भी मिश्रित देखा जाता है।

शुक्र के प्रभाव की वजह से इस अवधि में आपका थोड़ा कल्याण हो सकता है, किन्तु शनि के प्रभाव होने की वजह से सब कुछ एकदम से ठीक नहीं हो जायेगा आपके कार्य में बाधाएं आयेंगी किन्तु आप उसे अपनी मेहनत और दृढ़ता से दूर करने में सक्षम होंगे। आप अपने दृढ मेहनत और विश्वास से अपने लक्ष्य को पाने में सक्षम होंगे। इस अवधि में आपकी मेहनत और लगन ही आपकी सफलता की कुंजी होगी।

इस अवधि के दौरान आपको अच्छी ख़बरें मिलेंगी आपका विदेश यात्रा की संभावना बन सकती है। अपने छुट्टी का समय आप अपने परिवार और मित्रों के साथ बितायेंगे, उनके साथ यात्रा की योजनाएं बनायेंगे। यात्रा करते हुए आप हर जरुरी दस्तावेज अपने साथ रखें और अपनी कीमती सामान को अपने पास संभाल के रखें। ये अवधि आपके लिए शुभ और अशुभ दोनों पहलु को लेकर आती है इसलिए आपको सावधान रहने की जरूरत है।

आपका स्वास्थ्य आपके चिंता का कारण बन सकता है इसलिए डॉक्टर की सलाह का पालन करने का प्रयास करें और स्वस्थ जीवन शैली अपनाएं। इस अवधि के दौरान आपको किसी प्रिय को खोने का डर भी आपको परेशान कर सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि किसी भी बात को लेकर अधिक न सोचें जो आपके तनाव का कारण बनें और हर परिस्थिति में समझदारी से काम लें।

astrorobo.com

उपाय

- शुक्र की स्थिति को मजबूत बनाने के लिए छोटी इलायची, गूलर के पौधे, सेमल के पेड़ का कोई भाग, सुगंध वाली वस्तुएं जैसे इत्र और धूप, फूल के पौधों का उपयोग करना चाहिए। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ गूलर का भी उपयोग करना चाहिए। हवन में गूलर के पत्ते, या टहनी का प्रयोग करें। उल्का सिद्धा दशा के दौरान ये उपाय करने से आपको लाभ प्राप्त होगा।

- उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

उल्का - संकटा दशा

प्रारंभ तिथि:	16-1-2023 20:37
समाप्ति तिथि:	17-5-2024 20:37

उल्का योगिनी की तीसरी अंतर्दशा "संकटा अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 2 महीने की होती है तथा इसके स्वामी "राहु" है। इस अवधि को नकारात्मक और कठिन माना जाता है क्योंकि इस अंतर्दशा पर राहु का साया है।

माना जाता है कि राहु की मौजूदगी जीवन में अशांति फैलाती है, इसलिए इस अवधि को चुनौती से भरा हुआ माना जाता है। ये समय आपके और आपके परिवार के लिए कठिन हो सकता है। आपका परिवार, आपके जीवनसाथी, आपके बच्चे, गृहस्थ और मित्र सभी कठिन समय से गुजर सकते हैं। जहां वे स्वास्थ्य को लेकर, वित्तीय नुकसान को लेकर, स्कूल में किसी कठिनाई से या रोजगार के क्षेत्र में परेशानी से पीड़ित हो सकते हैं। ऐसी परिस्थिति में एक दूसरे का साथ देने की कोशिश करें, एक दूसरे का सहारा बनें। इस अवधि में अपने रिश्तेदार और अपने माता-पिता की सेहत का ख्याल रखें। किसी भी परिस्थिति में तनाव से बचें क्योंकि तनाव आपके स्वास्थ्य के साथ-साथ आपके मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती है। डॉक्टर की सलाह का पालन करने और स्वस्थ जीवन शैली बनाए रखने का प्रयास करें। इस अवधि के दौरान आप पने किसी प्रियजन को खो सकते हैं। आपके परिवार के लोग कई बार आपके विचारों से सहमत नहीं होंगे। आपके रिश्तेदार आपकी समझ और विचार के खिलाफ काम कर सकते है, जिसकी वजह से आपको अनेक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि जितना हो सके इस समय विवादों से बचें, ये समय थोड़ा कठिन है इसलिए इस समय में थोड़ी सावधानी बरतें।

उपाय

- राहु को मजबूत करने के लिए आपको मुरमुरे, मकोय का पौधा या टहनी, अदरक या सोंठ, सूखे तले हुए अनाज से बनी चीजें और बरमूडा घास का उपयोग करना चाहिए। केतु की स्थिति को मजबूत करने के लिए ईख से बनी वस्तुएं, नारियल के रेशे से बनी वस्तुएं, सेंधा नमक, सोफ, गिलोय, नींबू का प्रयोग हवन के लिए कर सकते हैं। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ हरी दूर्वा घास या ईख का भी हवन में प्रयोग करना चाहिए। संकटा दशा के दौरान ये उपाय करने से आपको अत्यंत लाभ प्राप्त होगा।

- उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

astrorobo.com

उल्का - मंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	17-5-2024 20:37
समाप्ति तिथि:	17-7-2024 17:37

उल्का योगिनी की चौथी अंतर्दशा "मंगला अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 5 महीनों की होती है तथा इसके स्वामी "चंद्रमा" को माना गया है। चन्द्रमा की प्रभाव की वजह से इस अवधि का प्रभाव भी आपके जीवन में अनुकूल ही होगा।

आपके जीवन में चल रही कठिनाईयों से चंद्रमा आपको आवश्यक राहत दिलाएगा। इस अवधि के दौरान आपको अनेक लाभ प्राप्त होंगे और साथ ही आपको करियर के क्षेत्र में भी अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। आपको अपनी परियोजनाओं में सफल होने के लिए आवश्यक समर्थन मिल सकता है। यदि आप व्यवसाय के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते है तो आपको आपके व्यवसाय में निवेश करने के लिए अच्छे निवेशक मिल सकते है। आपकी नौकरी की तलाश भी इस अवधि में आ कर पूरी होगी। आपके निजी संबंध भी अच्छे होंगे इस अवधि के दौरान तथा आपका परिवार आपकी खुशियों का कारण बन सकता है। आप पाने जीवनसाथी और अपने बच्चों के साथ अच्छा समय व्यतीत करेंगे साथ ही उनकी तरफ से आपको कुछ अच्छी खबर मिलने की संभावना है।

आप यदि अपनी पढाई बढ़ाना चाहते है तो ये समय आपके पढ़ाई को आगे बढ़ाने के लिए सबसे बेहतर समय है, इस अवधि में आप किसी भी विषय में अपना नामांकन करवा सकते है ये आपके लिए बेहतर परिणाम के अवसर लेकर आयेगा। इस अवधि के दौरान आपकी स्वास्थ्य संबंधी सारी परेशानी से भी राहत मिल सकती है।

उल्का - पिंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	17-7-2024 17:37
समाप्ति तिथि:	16-11-2024 11:37

उल्का योगिनी की पांचवीं अंतर्दशा "पिंगला अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 5 महीनों की होती है तथा इसके स्वामी "सूर्य" को माना गया है। सूर्य के कठोर स्वभाव का प्रकोप इस अवधि के प्रभाव में भी देखा जा सकता है, आमतौर पर ये अवधि एक प्रतिकूल चरण के रूप में जाना जाता है।

शनि और सूर्य दोनों का मिलाजुला रूप आपके जीवन में कुछ चुनौतियाँ लेकर आता है। आपके कार्यक्षेत्र और आपके परिवार दोनों ही तरफ से आपको परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। ऐसा भो सकता है कि कई चीजें आपके द्वारा बनायी गयी योजना के अनुसार नहीं चले। जिसकी वजह से आपको काम और घर में मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। इस अवधि में आपके माता-पिता का स्वास्थ्य आपके चिंता का विषय बना रह सकता है। इसलिए उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखें और डॉक्टर के द्वारा दी गयी सलाह का पालन करें।

आपको यात्रा करने के अवसर प्राप्त हो सकते है किन्तु यात्रा पर निकलने के दौरान आपको सतर्क रहने की आवश्यकता है। इस अवधि के दौरान यदि आप कार्य की वजह से यात्रा करते है तो वो यात्रा आपकी सफल नहीं होने की भी संभावना है। स्वास्थ्य संबंधी समस्या भी आपको हो सकती है इसलिए आपको नियमति उपचार करना चाहिए और डॉक्टर के संपर्क में रहना चाहिए।

उपाय

- आप बेलपत्र, कमल के बीज, महुआ के पेड़ के फूल, लाल चंदन, आक के पेड़ के फूल, पत्ती और लकड़ी तथा आंवला जैसी वस्तु अपने पास रख सकते हैं। इनमें से एक या एक से अधिक वस्तुएं रखने से आपको लाभ होगा क्योंकि इन वस्तुओं से भगवान सूर्य प्रसन्न होंगे। हवन करते समय

astrorobo.com

मुख्य सामग्री के साथ-साथ आक का भी प्रयोग करना चाहिए। मंगला पिंगला दशा के दौरान इन उपायों को करना लाभकारी सिद्ध होगा।

- उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

उल्का - धान्य दशा

प्रारंभ तिथि:	16-11-2024 11:37
समाप्ति तिथि:	18-5-2025 2:37

उल्का योगिनी की छठी अंतर्दशा धन्य है। इसकी अवधि 9 महीने की होती है तथा इसके स्वामी "बृहस्पति" है। इस अवधि को एक कठिन अवधि माना गया है और इस अवधि के प्रभाव भी प्रतिकूल होते है। इस अवधि में आपको कई सारी समस्या का सामना करना पड़ सकता है, आपके जीवन में कठिन चुनौतियां आयेंगी। इस अवधि में आपको अपने स्वास्थ्य का बेहद ख्याल रखना चाहिए क्योंकि आपको स्वास्थ्य संबंधी कुछ समस्या हो सकती है। यदि आपकी सेहत से जुड़ी कोई परेशानी तुरंत खत्म नहीं हो रही है तो आपको जल्द से जल्द डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए।

आपको रोजगार के क्षेत्र में भी कई परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपके साथ वाले सहकर्मी आपके विरोध में खड़े हो सकते है, आपके वरिष्ठ आपके कार्य से संतुष्ट नहीं होंगे जिसकी वजह से आपकी नौकरी खतरे में आ सकती है। कोई भी कार्य करते हुए आप अपना धैर्य न खोये, अपना सारा ध्यान अपने कार्य पर केंद्रित करें। जल्दबाज़ी में कोई भी ऐसा कार्य न करें जिससे आपको बाद में पछताना पड़े।

आपको अपने कार्य में बहुत अधिक प्रगति नहीं मिलने की संभावना है जिसकी वजह से आपको निराशा हो सकती है, किन्तु इस वक़्त आपको हौसले के साथ काम लेना चाहिए ताकि आप इस दुर्लभ परिस्थिति का सामना कर सकें। आपके व्यक्तिगत संबंध भी इस अवधि में प्रभावित होंगे। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप जल्दीबाज़ी में फैसला लेने से बचें।

उपाय

- आप बृहस्पति की स्थिति को मजबूत बनाने के लिए अनाज, नींबू, हल्दी, पीला सरसों और पीपल के पेड़ से बनी छोटी गोलियों का उपयोग कर सकते हैं। आपको अपने साथ रेशम और प्राकृतिक कपास रखना चाहिए। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ पीपल के पेड़ की शाखाओं और पत्तों का भी हवन में उपयोग करना चाहिए। संकट धान्या दशा के दौरान ये उपाय करने से आपको बहुत लाभ प्राप्त होगा।

- उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

उल्का - भ्रामरी दशा

प्रारंभ तिथि:	18-5-2025 2:37
समाप्ति तिथि:	16-1-2026 14:37

उल्का योगिनी की सातवीं अन्तर्दशा भ्रामरी है। इसकी अवधि 10 महीने की होती है तथा इसके स्वामी "मंगल" है। मंगल के प्रभाव की वजह से ये

astrorobo.com

समय थोड़ा कठिन होता है और इसके प्रभाव भी प्रतिकूल होते है। इस अवधि के दौरान आप में आत्मविश्वास की कमी होने की संभावना है इसके साथ ही आपके जीवन में संघर्ष बना रहेगा। इस अवधि के दौरान आपके शत्रु होने की संभावना है, जो आपके जीवन में परेशानी पैदा कर सकते है। जिसकी वजह से आप चिंताग्रस्त हो सकते है। यदि शांत मन से इन समस्याओं से निपटना चाहे तो आप इन समस्याओं से अच्छे तरीके से निपट सकते है।

आपके निजी जीवन में भी संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। आपके परिवार, प्रियजन, मित्र और सहकर्मी, आपके किसी भी संबंध में इस अवधि के दौरान सामंजस्य स्थापित नहीं हो पायेगा। जिसके कारण आप परेशान रहेंगे आपके मन को शांति नहीं मिलेगी। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपने सभी रिश्तें को संभाल के रखें और सभी को साथ ले कर चलें। रिश्तों से आये मतभेद को आप शांतिपूर्ण बातचीत से सुलझा सकते है।

इसके अलावा आपके स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं भी बनी रहेगी। आपके पुराने चोट या पुरानी बिमारियाँ फिर से ताज़ा हो सकती है, जिसको ठीक करने के लिए आपको एक उचित उपचार और बेहतर इलाज की आवश्यकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि सेहत से संबंधित किसी भी मुद्दे को लेकर लापरवाह न रहें। अपनी सेहत का पूरा ध्यान रखें।

उपाय

- मंगल ग्रह की स्थिति को मजबूत करने के लिए आपको बेल की लकड़ी, पत्ते और फूल, खैर के पेड़ की लकड़ी, लाल फूल, महरी, साबुत लाल मिर्च, काली मिर्च और हरड़ का उपयोग कर हवन करना चाहिए। अपने घर में इन मुख्य सामग्री के साथ आप पीपल का भी उपयोग कर सकते हैं। मंगला भ्रामरी दशा के दौरान उसकी स्थिति में सुधार करने के लिए इन पेड़ों की टहनी में रहने वाले घरों का उपयोग कर सकते हैं। आपके लिए ये उपाय लाभकारी सिद्ध होगा।

- उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

उल्का - भद्रिका दशा

प्रारंभ तिथि:	16-1-2026 14:37
समाप्ति तिथि:	16-11-2026 11:37

उल्का योगिनी की आठवीं अंतर्दशा भद्रिका है। इस अवधि का समय 25 महीने का होता है तथा इसके स्वामी "बुध" को माना गया है। शनि और बुध दोनों की कृपा इस अवधि के दौरान देखी जाती है इसलिए ये अवधि आमतौर पर मिश्रित परिणाम देने के लिए जाना जाता है।

इस अवधि में आपको आर्थिक लाभ तो होगा किन्तु आपको सतर्क रहने की भी आवश्कता है। धन के नये श्रोत आपको मिल सकते है किन्तु आपको अपनी कीमती सामान के प्रति सतर्क रहने की आवश्यकता है क्योंकि इस समय आपका कीमती सामान चोरी हो सकता है। यदि आपको किसी एक क्षेत्र में लाभ हासिल हो रहा है तो दूसरे क्षेत्र में आप हानि के शिकार हो सकते है। इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि किसी भी मुद्दे पर फैसले को लेने से पहले उसके पक्ष-विपक्ष पर अच्छे से विचार कर लें। जल्दबाज़ी में कोई भी फैसला न लें। आपको आपके परिवार और मित्र की तरफ से शुभ समाचार मिलने की संभावना है, आप उनकी खुशियों का हिस्सा बने। इस अवधि के दौरान आप अपने मनोरंजन के लिए भी कुछ समय निकाल सकते है। आपको ये सलाह दी जाती है की अच्छे और बुरे परिस्थिति चाहे जैसी भी हो आप अपना संयम न खोये और शांत मन से कोई भी कार्य करें।

उपाय

- आप हवन के लिए हाथी के दांत, कांटेदार भूसी के फूल, छुआरे, कस्टर्ड सेब, सफेद पेठा और गन्ने से बनी वस्तुओं का उपयोग कर सकते हैं। हवन

astrorobo.com

करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ चिचड़ी का भी उपयोग आपको करना चाहिए। उल्का भ्रदारिका दशा के दौरान ये उपाय करने से आपको बहुत लाभ प्राप्त होगा।

- उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

सिद्धि योगिनी दशा

प्रारंभ तिथि:	16-11-2026 11:37
समाप्ति तिथि:	16-11-2033 11:37

सिद्धा सातवीं योगिनी दशा है। इसकी अवधि 7 वर्ष की होती है तथा इसके स्वामी "शुक्र" को माना गया है। शुक्र की कृपा की वजह से ये अवधि आपको अनुकूल और सुखद प्रभाव देती है। सिद्धा दशा हर प्रकार से आपका शुभ करती है। ये दशा आपके अनुकूल है जिसकी वजह से यदि आप कोई कार्य आरंभ करते है तो उसके शुभ परिणाम आपको अवश्य प्राप्त होंगे। यदि आपको किसी कार्य के न होने की आशंका है तो आप उस कार्य को यदि इस अवधि में करेंगे तो वो कार्य अवश्य पूरा होगा और आपको सफलता भी हासिल होगी।

आपके जीवन में पहले से चल रही परेशानियों से इस अवधि में आपको कुछ राहत मिल सकती है। आपके जीवन में अच्छे कार्य होंगे, आपको शुभ समाचार मिलने की संभावना है। आपको घर में शुभ अवसरों और समाचार आपको प्राप्त होंगे। आपकी रोजगार के क्षेत्र में भी उन्नति होगी जैसे आपकी आय बढ़ सकती है या आपकी पदोन्नति हो सकती है। आपके घर में शुभ अवसर आयेंगे, घर में विवाह होने की संभावना है या परिवार के किसी सदस्य को संतान प्राप्ति होगी।

यदि आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ अच्छा करना चाहते है तो ये अवधि आपके लिए व्यवसाय के नये अवसर ला सकती है। यदि आप कई दिनों से रोजगार की तलाश कर रहे है तो ये अवधि आपको आपके मनपसंद रोजगार दिलाने में भी मददगार साबित होगी। आपका रोजगार और व्यवसाय सही ढंग से चलने की वजह से आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अच्छी आर्थिक स्थिति होने की वजह से आप घर खरीदने की योजना बना सकते है और सुख-सुविधा की सभी चीजें अर्जित कर सकते हैं। शुक्र सुंदरता और प्रेम को नियंत्रित करता है, इसलिए इस अवधि के दौरान आप अपनी सुंदरता से जुड़ी चीजों पर ध्यान देंगे। आपको कपड़े और गहने लेने का शौक है जिसकी वजह से आप नये कपड़े और गहने की खरीदारी करने से बाज़ नहीं आयेंगे। अपने विपरीत लिंग के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता रखते है तथा उनकी संगति का आनंद भी लेते हैं।

उपाय

- शुक्र की स्थिति को मजबूत बनाने के लिए छोटी इलायची, गूलर का पौधा, सेमल के पेड़ का कोई भाग, सुगंध वाली वस्तुएं जैसे इत्र और धूप, फूल मूली के फूल के पौधे का प्रयोग कर हवन कर सकते हैं।

- सिद्धा महादशा के दौरान 6 या 13 मुखी रुद्राक्ष धारण कर आप उसके लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

astrorobo.com

सिद्धि - सिद्धि दशा

प्रारंभ तिथि:	16-11-2026 11:37
समाप्ति तिथि:	27-3-2028 15:7

सिद्ध योगिनी की पहली अंतर्दशा "सिद्धा अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 30 महीने और 20 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "शुक्र" को माना गया है। सिद्धा योगिनी दशा में जब सिद्धा की ही अंतर्दशा होती है तो हर तरफ से सिद्धि ही प्राप्त होती है, सारे बिगड़े कार्य बनते है। इस अवधि के दौरान धन, वैभव, ऐश्वर्य की वृद्धि होने लगती है, कीर्ति और राजसम्मान प्राप्त होने लगता है, प्रियजनों से प्यार और अपनापन प्राप्त होता है। इस अवधि के दौरान आपका आपके जीवनसाथी के साथ संबंध अच्छा और मजबूत रहेगा। आप एक-दूसरे के साथ ख़ुशी के पल साझा कर सकते है। इस अवधि के दौरान आपको संतान सुख की प्राप्ति होगी। आप अपने जीवनसाथी के साथ छुट्टी पर भी जा सकते है। आपके संतान की वजह से आपको खुशखबरी भी मिलने की संभावना है।

यदि रोजगार के क्षेत्र की बात करें तो आपके रोजगार के क्षेत्र में भी तरक्की होने की संभावना है। आपको अपने रोजगार में नये अवसर प्राप्त होंगे और आपकी मेहनत और लगन से आपके वरिष्ठ आपसे खुश रहेंगे और आपके योगदान के लिए आपकी सराहना करेंगे। आपको बेहतर कार्य के लिए पुरस्कृत भी किया जा सकता है। यदि आप अपना कोई व्यापार शुरू करना चाहते है तो ये अवधि आपके लिए शुभ है और व्यापार शुरू करने के लिए ये एक अच्छा समय हो सकता है।

सिद्धि - संकटा दशा

प्रारंभ तिथि:	27-3-2028 15:7
समाप्ति तिथि:	16-10-2029 19:7

सिद्धा योगिनी की दूसरी अंतर्दशा "संकटा अन्तर्दशा" है। इसका समय 18 महीने का होता है तथा इसके स्वामी "राहु" को माना गया है। चूँकि इस अवधि पर राहु का शासन है इसलिए आपके जीवन में इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। इस अवधि का प्रभाव आपके व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन पर पड़ने की संभावना है। इस अवधि के दौरान आपके परिवार के लोगों को भी काफी कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। आपके वैवाहिक जीवन पर भी इसका गहरा असर पड़ेगा, आपके और आपके जीवनसाथी के बीच मतभेद हो सकता है। जिसकी वजह से आपको काफी तनाव से गुजरना पड़ेगा। यदि सेहत के संबंध में बात करें तो आपको अपने और अपने जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ख्याल रखना चाहिए। आपको रोजगार के क्षेत्र में भी नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। आप यदि व्यापार में निवेश करते है तो आपको उस क्षेत्र में नुकसान होने की संभावना है, आपकी नौकरी खतरे में पड़ सकती है जिसकी वजह से आपके आय के श्रोत भी कम हो सकते है। इसके अलावा यदि आपके मित्र आपसे पैसे कर्ज लेते है तो उनके द्वारा वो पैसे वापस किये जायेंगे इसकी संभावना भी बहुत कम है। आपको अपनी कीमती चीजों की हिफाजत खुद ही करनी चाहिए क्योंकि उन चीजों की चोरी होने की संभावना है। इतने सारे क्षेत्र में परेशानी झेलने की वजह से आपको ये सलाह दी जाती है कि आप शांत मन और धैर्य से काम लें और परिस्थिति को देख कर घबराये नहीं उनका डट कर सामना करें।

उपाय

- राहु को मजबूत बनाने के लिए आपको मुरमुरे, मकोय का पौधा या टहनी, अदरक, सूखे भुने हुए अनाज से बनी चीजें और बरमूडा घास का इस्तेमाल करना चाहिए। केतु को मजबूत बनाने के लिए ईख से बनी चीजें, नारियल के रेशे से बनी चीजें, सेंधा नमक, कुर्सियाँ, सोफा, गिलोय, नींबू और करहल का इस्तेमाल करना चाहिए। मुख्य सामग्री के साथ हवन करते समय हवन में हरी दूर्वा घास या ईख का इस्तेमाल करना चाहिए।

astrorobo.com

संकटा दशा के दौरान उपाय करने से आपको बहुत लाभ होगा।

- आप अपनी सिद्ध महादशा के दौरान 6 या 13 मुखी रुद्राक्ष पहनने से लाभान्वित हो सकते हैं।

सिद्धि - मंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	16-10-2029 19:7
समाप्ति तिथि:	26-12-2029 19:37

सिद्धा योगिनी की तीसरी अंतर्दशा "मंगला अन्तर्दशा" है। इसकी अवधि 4 महीने 21 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "चंद्रमा" को माना गया है। चन्द्रमा द्वारा शासित ये अवधि आपको आमतौर पर अनुकूल परिणाम देती है। ये अवधि आपके लिए सुख,धन, ऐश्वर्य लेकर आती है। ये अवधि आपके जीवन में ख़ुशी और आनंद का अग्रदूत है। आपको अपने करियर में तरक्की हासिल होगी, आप जिस रोजगार की तलाश कर रहे है वो रोजगार आपको इस अवधि में प्राप्त हो सकती है। आपकी नौकरी में पदोन्नति हो सकती है या आय वृद्धि हो सकती है। पहले से रुके हुए सभी कार्य आपके इस अवधि में पूरे होंगे।

पारिवारिक तथा वैवाहिक जीवन सुखमय होगा। आपके रिश्तेदार और आपके बच्चों से आपको कुछ खुशखबरी मिलने की संभावना है। आपका वैवाहिक जीवन आनंदमय होगा, आपके जीवनसाथी के साथ बेहद खुश महसूस करेंगे और हर परिस्थिति में आपको उनका साथ मिलता रहेगा।

इस अवधि में आपको आर्थिक लाभ भी प्राप्त होंगे, व्यवसाय में किये गए निवेश से आपको लाभ मिलने की संभावना है। चूँकि आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी है इसलिए आप आराम और विलासिता की हरसंभव चीज को प्राप्त करने की कोशिश करेंगे।

ये अवधि आपके लिए बेहद अनुकूल है यदि आप कड़ी मेहनत और लगन से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश करते है तो आपके सभी लक्ष्य भी पूरे होंगे और आप अपनी इच्छाओं को पूरा करने का भी सामर्थ्य रखते है।

सिद्धि - पिंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	26-12-2029 19:37
समाप्ति तिथि:	17-5-2030 20:37

सिद्धा योगिनी की चौथी अन्तर्दशा "पिंगला अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 7 महीने की होती है तथा इसके स्वामी "सूर्य" को माना गया है। सूर्य के प्रभाव की तरह इस अवधि का परिणाम भी कठोर और प्रतिकूल देने के लिए जाना जाता है। ये अवधि आपके जीवन में अनेक चुनौतियां लेकर आती है, जिसका आपको हर हाल में सामना करना पड़ता है। इस अवधि के दौरान आप में आत्मविश्वास की कमी होगी तथा आपको स्वभाव से अभिमानी और जिद्दी हो सकते है। आपके स्वभाव में इस प्रकार का बदलाव भी आपके लिए कठिनाई का कारण बन सकता है।

सूर्य का प्रकोप आपके व्यक्तिगत जीवन पर भी पड़ता है और आपकी आपके परिवार और मित्र से लड़ाई हो सकती है। आप उनसे इस हद तक बहस कर लेंगे कि आगे आने वाले समय में जब कभी आपको उनकी मदद की जरूरत होगी तो वो आपको मदद करने से इंकार कर सकते हैं। इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि अपने व्यवहार पर नियंत्रण रखें और दूसरों के साथ सम्मानपूर्वक तरीके का व्यवहार करें।

इस अवधि के दौरान आपको कुछ बुरी आदत भी लग सकती है और इस चक्कर में आप अपना बहुत सारा धन फिजूलखर्च कर देंगे या अपने उपयोग के लिए दूसरे के धन का दुरुपयोग करने की भी संभावना है। आप अपने मनोरंजन के विचार में अपना और अपने परिवार के लोगों का बहुत सारा धन

astrorobo.com

पानी में डूबो सकते है। आपकी ये गतिविधियां आपके जीवन में अनेक परेशानी खड़ी कर सकता है।

इस अवधि में आपके ऊपर खतरा मंडरा सकता है जिसकी वजह से आपकी दुर्घटना होने की संभावना है। आपको आग या आग की किसी भी पदार्थ से दूर रहने की सलाह दी जाती है क्योंकि आग आपके लिए इस अवधि के बेहद खतरनाक साबित हो सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि इस अवधि के दौरान आप अपना ख्याल रखें और अपने स्वभाव को नियंत्रण में रखें।

सिद्धि - धान्य दशा

प्रारंभ तिथि:	17-5-2030 20:37
समाप्ति तिथि:	16-12-2030 22:7

सिद्धा योगिनी की पाँचवीं अन्तर्दशा "धान्या अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 9 महीने 11 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "बृहस्पति" को माना गया है। इस दशा में शनि के प्रभाव के बाद भी इसकी धान्या अंतर्दशा में बृहस्पति के प्रभाव की वजह से ये अवधि अनुकूल परिणाम देने में सक्षम है। ऐसा माना जाता है कि बृहस्पति भाग्य लेकर आता है जिसकी वजह से इस अवधि में आपको सौभाग्य प्रदान करता है।

ये अवधि ज्यादातर लोगों के लिए भाग्यशाली होता है और इस अवधि के दौरान आपको आपके पिछले पापों से मुक्ति मिलती है और आपके अच्छे कर्मों का परिणाम आपको प्राप्त होता है।

व्यवसाय के क्षेत्र की यदि बात करें तो ये अवधि आपके रोजगार को आगे बढ़ाने के अवसर ला सकती है और इस अवधि में आपको लाभ भी प्राप्त होंगे। रोजगार के क्षेत्र में आपको बेहतर अवसर प्राप्त होंगे जैसे आपकी वेतन में बढ़ोत्तरी हो सकती है या फिर पदोन्नति हो सकती है। व्यापार कर रहे लोगों के लिए भी ये अवधि फलदायी हो सकती है। आपका कोई कार्य जो पहले से अटका हुआ है वो इस अवधि के दौरान पूरा होने की संभावना है। यदि आप कोई नयी परियोजना शुरू करना चाहते है तो इससे बेहतर समय आपके लिए कोई और नहीं होगा। इस समय आपको अपनी परियोजना को पूरा करने के लिए आवश्यक संसाधन इस अवधि के बाद न मिलने की संभावना है। इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि आपके जो भी कार्य है आप कोशिश करें कि इस अवधि के दौरान जो सभी कार्य पूरे हो जाये।

सिद्धि - भ्रामरी दशा

प्रारंभ तिथि:	16-12-2030 22:7
समाप्ति तिथि:	27-9-2031 0:7

सिद्धा योगिनी की छठी अंतरदशा "भ्रामरी अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 11 महीने और 20 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "मंगल" को माना गया है। इस अवधि में शनि की दशा तथा मंगल की अंतर्दशा मौजूद होती है जिसकी वजह से ये मिश्रित परिणाम देने के लिए अनुकूल है।

यह अवधि न तो बहुत अच्छा फल देती है और न ही बहुत बुरा फल देती है। ये अवधि यदि आपके जीवन में कठिन परिस्थिति लाता है तो उससे निकलने के उपाय भी यदि अवधि प्रदान करती है। ये अवधि आपके पारिवारिक जीवन तथा रोजगार के क्षेत्र दोनों ही स्थिति में आपको उम्मीद में अवसर और चुनौती दोनों प्रदान करती है। इस अवधि के दौरान आपको अपने कार्य के सिलसिले में विदेश जाने की संभावना बन सकती है, और आपका ये प्रवास काल अपने जितना सोचा उससे अधिक बढ़ भी सकता है। ऐसी भी संभावना है कि आप विदेश में बस सकते है यदि आप विदेश में बसना मंजूर नहीं करते है तो भी आप अपने घर में नहीं रह पायेंगे, आपको अपने घर से दूर रहना ही पड़ेगा। यदि आप अपने घर का त्याग कर अपनी रोजगार के लिए बाहर आते है तो आपके जीवन का ये बदलाव आपके पक्ष में काम कर सकता है।

astrorobo.com

यदि इस अवधि के नकारात्मक पक्ष की बात करें तो ये अवधि आपके लिए कुछ कठिनाई भी लाती है। आप सरकारी दस्तावेजों और अपने आय-व्यय के हिसाब के सभी कागज को हमेशा तैयार रखें क्योंकि सरकार आपसे ये सभी दस्तावेज कभी भी मांग सकती है और यदि उस वक़्त ये कागज आपके पास पूरे न हो तो अधिकारियों के द्वारा आप दण्डित भी हो सकते हैं। इस अवधि के दौरान ऐसी संभावना है कि आप बुरी संगत में पड़ सकते है या आपको बुरी आदतें लग सकती है। आपको ये सलाह दी जाती है कि इस अवधि के दौरान अच्छे और बुरे दोनों वक़्त में अपना संयम न खोएं और समझदारी से काम लें।

सिद्धि - भद्रिका दशा

प्रारंभ तिथि:	27-9-2031 0:7
समाप्ति तिथि:	16-9-2032 2:37

सिद्धा योगिनी की सातवीं अंतर्दशा "भद्रिका अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 13 महीने 29 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "बुध" है। बुध के प्रभाव की वजह से इस अवधि के परिणाम भी आपके अनुकूल होंगे। ये अवधि आपके लिए ख़ुशी, धन, वैभव इत्यादि लेकर आएगा। आपको ख़ुशी तथा जश्न मनाने के कई मौके इस अवधि के दौरान मिलेंगे। ये अवधि आपके लिए खुशखबरी लेकर आ सकता है। आपके पारिवारिक जीवन में भी सुखमय माहौल रहेगा और आप अपने परिवार तथा मित्र के साथ जश्न मनाने के मौके प्राप्त करेंगे।

इस अवधि के दौरान आपकी आर्थिक तंगी भी दूर होगी जिसकी वजह से आप अपने घर को एक नया रूप देने तथा घर की साज-सज्जा के लिए अनेक संसाधन जुटाने में सक्षम होंगे। आप अच्छी आदतों को अपनी जीवन शैली में शामिल करेंगे और अपने जीवन को अपनी शर्तों पर जीने की क्षमता रखते है।

यदि आपके स्वास्थ्य की बात की जाये तो आपका स्वास्थ्य इस अवधि में सही रहेगा और आपको अपने स्वस्थ जीवन के निर्माण के लिए इस अवधि का लाभ उठाना चाहिए। अपने स्वस्थदिनचर्या की वजह से आपको नयी ऊर्जा का आभास होगा।

कार्यक्षेत्र में भी आपको लाभ प्राप्त होगा, आपका संबंध आपके सहकर्मी और वरिष्ठों के साथ आपके संबंध में सुधार हो सकता है, जिससे आपके लिए अपना लक्ष्य हासिल करना आसान हो जायेगा। यदि आप कोई नया कार्य शुरू करने की इच्छा रखते है तो ये अवधि आपके कार्य को शुरू करने के लिए अनुकूल है। आपको सलाह दी जाती है कि आप चाहे जो भी कार्य करें बस पूरी लगन के साथ करें और इस अवधि का भरपूर लाभ उठायें।

सिद्धि - उल्का दशा

प्रारंभ तिथि:	16-9-2032 2:37
समाप्ति तिथि:	16-11-2033 11:37

सिद्धा योगिनी की आठवीं और अंतिम अंतर्दशा "उल्का अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 9 महीने 11 दिनों को होती है तथा इसके स्वामी "शनि" है। शनि की दशा में शनि की अंतर्दशा होने की वजह से ये अवधि प्रतिकूल परिणाम ही देती है। शनि द्वारा शासित चरण आमतौर पर आसान नहीं होता है।

इस अवधि में आपके आत्मविश्वास में कमी होने की संभावना है साथ ही आपके जीवन में कष्ट और क्लेश भी बना ही रहेगा। इस अवधि के दौरान आपको जीवन के हर कदम पर चुनौती का सामना करना पड़ सकता है। रोजगार के क्षेत्र में भी आपको हानि होने की संभावना है, आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे किसी बात को लेकर दुखी हो सकते है जिसकी वजह से आपकी नौकरी पर भी खतरा हो सकता है। आपकी आय में कटौती या नौकरी जाने की वजह से आपको धन हानि का दुःख भी सहना पड़ेगा। अपने व्यापार के मामले में आप सोच समझ कर फैसला लें क्योंकि एक भी

astrorobo.com

गलत फैसला आपको वित्तीय नुकसान की खायी में धकेल सकता है और इसकी वजह से आपकी इज्जत-प्रतिष्ठा भी संकट में पड़ सकती है।

आपके वैवाहिक जीवन पर भी इस अवधि का प्रतिकूल प्रभाव ही पड़ेगा। जीवनसाथी के साथ आपके प्रेम में कमी आ सकती है, आप दोनों के बीच किसी बात को लेकर मतभेद हो सकते है। ये अवधि आपके प्रेम भरे स्वभाव को नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा जिसका सीधा असर आपके प्रियजनों और आपके बच्चों पर पड़ेगा।

यदि स्वास्थ्य की बात करें तो स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह अवधि बहुत अच्छी नहीं हो सकती है। आपको स्वस्थ रहने के लिए एक स्वस्थ जीवन शैली का पालन करने और सावधानी बरतने की आवश्यकता है। अगर आपको कोई भी स्वास्थ्य संबंधी समस्या का आभास होता है, तो तुरंत डॉक्टर से सलाह लें और उनकी बताई गयी बात का पालन करें। आपको एक बात समझने की आवश्यकता है कि समय चाहे कितना भी बुरा हो वो एक न एक दिन गुजर ही जाता है इसलिए आपको इस अवधि के दौरान घबराने की आवश्यकता नहीं है यदि आप शांत मन और संयम से काम लेंगे तो हर परेशानी से पार पा लेंगे।

- आप अपनी सिद्ध महादशा के दौरान 6 या 13 मुखी रुद्राक्ष पहनने से लाभान्वित हो सकते हैं।

astrorobo.com

संकटा योगिनी दशा

प्रारंभ तिथि:	16-11-2033 11:37
समाप्ति तिथि:	16-11-2041 11:37

संकटा योगिनी दशा की आठवीं दशा है। इसकी अवधि 8 वर्षो की है तथा इसके स्वामी "राहु" को माना गया है। राहु के प्रकोप की वजह से इस अवधि का परिणाम प्रतिकूल होता है। जैसा कि सभी जानते है कि राहु को दुर्भाग्य, दुख और शोक लाने के लिए जाना जाता है, इसलिए इस अवधि के दौरान भी आपको अपने जीवन के सभी पहलुओं में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

आपके रोजगार के क्षेत्र में भी स्थिति आपके अनुकूल नहीं होने की संभावना है। ऐसी संभावना है कि कार्य क्षेत्र में आपको आपके वरिष्ठ आपके विचार से सहमत नहीं होंगे और आपके लक्ष्य को प्राप्त करने में आपका समर्थन न दें। अपने सहकर्मी के साथ भी आपको समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि बातचीत के दौरान आप शांत और विनम्र रहने की कोशिश करें क्योंकि आपका ये व्यवहार आपकी नौकरी पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता हैं। व्यापार के क्षेत्र में यदि आप आगे बढ़ना चाहते है तो आपको हानि होने की संभावना है। आपको अपने जीवन में अनेक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आप अपने कार्यक्षेत्र में कुछ कानूनी मुद्दों में भी फंस सकते है जिसकी वजह से आपको कारावास भी हो सकता है या जुर्माना भरना पड़ सकता है। आप समझ में होनी इज्जत, प्रतिष्ठा खो सकते सकते है। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप किसी भी अवैध गतिविधि में शामिल न हो।

इस अवधि के दौरान आप अपने किसी प्रियजन को खो सकते है। इस अवधि के दौरान आपके बच्चों को भी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, ऐसी संभावना है कि उसको उनके मन के हिसाब के विद्यालय में नामांकन न मिलें या परीक्षा का परिणाम मन के अनुकूल न हो । आपको इस अवधि के दौरान अपने मन को शांत रखने की कोशिश करें और जल्दबाजी में कोई भी फैसला लेने से बचें।

उपाय

- राहु की स्थिति को मजबूत बनाने के लिए गगूल, मुरमुरे, मकोय का पौधा या टहनी, अदरक या सूखी अदरक, सूखे तले हुए अनाज से बनी चीजें और बरमूडा घास का उपयोग कर करके हवन कर सकते हैं। केतु की स्थिति को मजबूत करने के लिए ईख से बनी वस्तुएं, नारियल के रेशे से बनी वस्तुएं, सेंधा नमक, कुर्सियां, सोफा, गिलोय, नींबू और करहल के बीज का प्रयोग आप हवन में कर सकते हैं।

- राहु केतु विकट महादशा के दौरान 9 मुखी रुद्राक्ष धारण करना आपके लिए लाभकारी सिद्ध होगा।

संकटा - संकटा दशा

प्रारंभ तिथि:	16-11-2033 11:37
समाप्ति तिथि:	27-8-2035 19:37

संकटा योगिनी की पहली अंतर्दशा "संकटा अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 3 महीने और 20 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "राहु" है। राहु की दशा में राहु की अंतर्दशा होने की वजह से इस अवधि के परिणाम भी प्रतिकूल होते है। आपको जीवन में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। आमतौर पर यह एक प्रतिकूल अवधि ही है। इस अवधि के दौरान आपको रोजगार के क्षेत्र में कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है।

astrorobo.com

आपको आपके वरिष्ठ अधिकारियों की नाराजगी, काम करने में बाधा इत्यादि का सामना करना पड़ सकता है। सरकारी कार्यों में भी कोई न कोई बाधा लगी रहती है इसके साथ ही आपको अपनी वर्तमान नौकरी को छोड़ कर किसी दूसरे जगह भी जाना पड़ सकता है।

आपको ये सलाह दी जाती है कि आप केवल अपने काम पर अपना ध्यान केंद्रित रखने की कोशिश करें और ये सुनिश्चित करें कि आप अपने नियोक्ता द्वारा निर्धारित किसी भी प्रणाली, प्रक्रियाओं, नियमों का पालन करते हैं।

इस अवधि के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति भी कमजोर हो सकती है जिसके अनेक कारण होंगे। आपकी आय में कटौती हो सकती है और व्यापार में किये गए निवेश में भी आपको नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपनी कमाई में से कुछ बचत करने की कोशिश करें जो इस कठिन परिस्थिति के आपके लिए लाभप्रद साबित होगी। इस अवधि के दौरान आप अपने और अपने प्रियजनों की सेहत का ध्यान रखें क्योंकि इस अवधि में आपको अपने किसी प्रियजनों के खोने की संभावना है।

उपाय

- राहु को मजबूत करने के लिए आपको मुरमुरे, मकोय का पौधा या टहनी, अदरक या सोंठ, सूखे तले हुए अनाज से बनी चीजें और बरमूडा घास का उपयोग करना चाहिए। केतु की स्थिति को मजबूत करने के लिए ईख से बनी वस्तुएं, नारियल के रेशे से बनी वस्तुएं, सेंधा नमक, सोफ, गिलोय, नींबू का प्रयोग हवन के लिए कर सकते हैं। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ हरी दूर्वा घास या ईख का भी हवन में प्रयोग करना चाहिए। संकटा दशा के दौरान ये उपाय करने से आपको अत्यंत लाभ प्राप्त होगा।

- विकट महादशा के दौरान 9 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

संकटा - मंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	27-8-2035 19:37
समाप्ति तिथि:	16-11-2035 23:37

संकटा योगिनी की दूसरी अंतर्दशा "मंगला अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 6 महीने 11 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "चंद्रमा" को माना गया है। चंद्रमा के प्रभाव की वजह से इस अवधि के परिणाम भी प्रतिकूल ही होते है। इस अवधि का असर आपके मानसिक और शारीरिक दोनों स्थिति पर पड़ता है।

इस अवधि के दौरान आपको अपनी सेहत का विशेष ध्यान रखना चाहिए। आपको मस्तिष्क संबंधी समस्या का हो सकती है, जिसका ईलाज करवाना आपके लिए बेहद जरूरी होगा। आपको अपने साथ-साथ अपने परिवारजनों तथा अपने जीवनसाथी के स्वास्थ्य का भी ख्याल रखना चाहिए। इस अवधि के दौरान आपकी माता पर स्वास्थ्य संबंधी खतरा हो सकता है, इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि अपने परिवार का एक निर्धारित नियमित स्वास्थ्य जांच करवाते रहें ताकि भविष्य में आने वाले किसी भी खतरे को टाला जा सके।

यदि व्यक्तिगत संबंध की बात करें तो आपके परिवार और आपके जीवनसाथी दोनों के साथ आपके तालमेल ठीक नहीं बैठने की संभावना है। आपके और आपके जीवनसाथी के बीच किसी बात को लेकर गलतफहमी हो सकती है जिसकी वजह आपके बीच मतभेद होने की संभावना है। आपको ये सलाह दी जाती है कि ऐसी परिस्थिति में बात को आगे न बढ़ने दें और जीवनसाथी के साथ बैठ कर बातचीत कर के अपने बीच की इस गलतफहमी को दूर करने का प्रयास करें। अन्यथा ये ग़लतफ़हमी आपके रिश्ते को ख़राब कर देगी।

चंद्रमा का स्वभाव है मन और भावनाओं पर शासन करना ऐसे में इस अवधि के दौरान आप मानसिक और भावनात्मक रूप से पीड़ित हो सकते है। लगातार बने इस तनाव और प्रतिकूल परिस्थिति आपको अस्वस्थ्य बना सकती है इसके साथ ही आप बुरी आदतों के शिकार हो सकते है। इस अवधि

astrorobo.com

के दौरान आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपने विवेक से काम लें और अपने मन को शांत रखने की कोशिश करें।

संकटा - पिंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	16-11-2035 23:37
समाप्ति तिथि:	27-4-2036 7:37

संकटा योगिनी की तीसरी अन्तर्दशा "पिंगला अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 9 महीने की होती है तथा इसके स्वामी "सूर्य" को माना गया है। सूर्य के कठोर प्रभाव का असर इस अवधि पर भी पड़ता है जिसकी वजह से ये अवधि भी प्रतिकूल परिणाम देता है। इस अवधि के दौरान आपको मानसिक परेशानी हो सकती है इसके साथ ही आपको अपने व्यक्तिगत संबंध में भी कुछ समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

इस अवधि के दौरान आपके कई शत्रु हो सकते है, जो आपको नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकते है या आपको परेशानी में डाल सकते है। इस स्थिति की वजह से आप तनाव में रह सकते है। इस अवधि के दौरान आपके बच्चें दुःखी और परेशान रह सकते है या फिर आपको आपके बच्चों से संबंधित कोई दुखी करने वाले समाचार मिल सकते है। ऐसी भी संभावना है कि इस अवधि के दौरान आपके बच्चें का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि अपने बच्चों के साथ कुछ समय बिताने की कोशिश करें ताकि आपके बच्चें अपनी परेशानी आपके साथ साझा कर सके और आप उनकी समस्या का निदान ढूंढ पायें।

आर्थिक रूप से भी ये समय आपके लिए भारी सिद्ध होगा आपको कई सारी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपके रोजगार के क्षेत्र में आपको खतरा हो सकता है जैसे आपकी आय कम हो सकती है या आपकी नौकरी जा सकती है या फिर आपको व्यापार के निवेश में नुकसान हो सकता है। आपको अपनी कीमती चीजों को संभाल के रखने की आवश्यकता हो क्योंकि आपके घर चोरी होने की भी संभावना है।

आपको ये सलाह दी जाती है कि इस अवधि के दौरान आप सतर्क रहें और अपने दिमाग को शांत रखने की कोशिश करें।

उपाय

- आप पलाश के पेड़ के उत्पादों जैसे लकड़ी, फूल और पत्तियों का उपयोग कर सकते हैं। सफेद चंदन, सीपियां, पानी और रेशे वाला नारियल तथा नारियल के रेशों से बनी वस्तुओं का उपयोग करना भी आपके लिए लाभकारी रहेगा। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ पलाश, डाक के पत्ते और टहनियों का भी उपयोग करना चाहिए। संकट मंगल दशा के दौरान उपाय करने से आपको अत्यंत लाभ प्राप्त होगा।

- विकट महादशा के दौरान 9 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

संकटा - धान्य दशा

प्रारंभ तिथि:	27-4-2036 7:37
समाप्ति तिथि:	26-12-2036 19:37

संकटा योगिनी की चौथी अंतर्दशा "धन्या अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 11 महीने 20 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "बृहस्पति" को माना गया

astrorobo.com

है। बृहस्पति और राहु दोनों के प्रभाव की वजह से इस अवधि का परिणाम भी दोनों ग्रहों के हिसाब से मिश्रित ही प्राप्त होता है। ये अवधि आपके लिए शुभ और अशुभ दोनों तरह के परिणाम लाता है। बृहस्पति को सौभाग्य लाने वाला माना जाता है इसलिए इसपर राहु का असर भी बहुत कम होता है।

यदि इस अवधि के शुभ प्रभाव की बात करें तो आपके रोजगार के क्षेत्र के क्षेत्र में ये अवधि शुभ प्रभाव देता है। इस अवधि के दौरान आपके भविष्य के लिए बेहतर मार्ग खुलेंगे और आपको विदेश जाने के अवसर प्राप्त होंगे। आपको विदेश में भी अच्छे ऑफर और अच्छे संबंध स्थापित करने के मौके मिलेंगे।

व्यक्तिगत संबंध के क्षेत्र में भी आपको शुभ परिणाम मिलने की संभावना है। आपको अपने बच्चों से अच्छी खबर मिलने की संभावना है। इस अवधि में आप अपने पारिवारिक सुख और शांति का आनंद लेंगे और अपनी छुट्टियों का वक्त अपने परिवार के साथ बिता सकते है।

इस अवधि के अशुभ पक्ष में आपका स्वास्थ्य आता है। स्वास्थ्य की यदि बात करें तो ये अवधि आपके स्वास्थ्य के लिए बिल्कुल भी शुभ नहीं है। आपको पेट, सर्दी-खांसी, दस्त इत्यादि जैसी समस्याएं लगी ही रहेगी। आपको ये सलाह दी जाती है कि इस अवधि में आप अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें और नियमित स्वास्थ्य जांच करवाते रहें।

उपाय

- आप बेलपत्र, कमल के बीज, महुआ के पेड़ के फूल, लाल चंदन, आक के पेड़ के फूल, पत्ती और लकड़ी तथा आंवला जैसी वस्तु अपने पास रख सकते हैं। इनमें से एक या एक से अधिक वस्तुएं रखने से आपको लाभ होगा क्योंकि इन वस्तुओं से भगवान सूर्य प्रसन्न होंगे। हवन करते समय मुख्य सामग्री के साथ-साथ आक का भी प्रयोग करना चाहिए। मंगला पिंगला दशा के दौरान इन उपायों को करना लाभकारी सिद्ध होगा।

- विकट महादशा के दौरान 9 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

संकटा - भ्रामरी दशा

प्रारंभ तिथि:	26-12-2036 19:37
समाप्ति तिथि:	16-11-2037 11:37

संकटा योगिनी की पांचवीं अंतर्दशा "भ्रामरी अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 13 महीने और 10 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "मंगल" है। मंगल के प्रभाव की वजह से इस अवधि का परिणाम भी प्रतिकूल होता है। ये अवधि आपके लिए धन, वैभव, ऐश्वर्य के क्षेत्र में चिंताएं लेकर आता है।

ये अवधि आपके करियर के हिसाब से परेशानी का कारण बन सकता है, इसमें आपको आगे बढ़ने के मौके तो मिलेंगे किन्तु उसमे बाधा भी बहुत आयेगी। आपको विदेश यात्रा के मौके मिलेंगे किन्तु आपको इस तरह के मौकों की पूरी जांच कर लेने के बाद ही आगे की योजना बनानी चाहिए। यदि आपको विदेश यात्रा के अवसर नहीं मिलते है तो आपको बेहतर रोजगार के मौकों के लिए अपने घर से दूर रहना पड़ सकता है।

इस अवधि में आपको अपने शत्रु से सावधान रहना चाहिए क्योंकि वो आपको नुकसान पहुंचाने की पूरी कोशिश करेंगे किन्तु आपका कुछ बिगाड़ नहीं पायेंगे। हालांकि इस सब की वजह से आपको मानसिक और भावनात्मक तनाव हो सकता है। इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि आप किसी भी कार्य को करते हुए या किसी से बात करते हुए अपने मन को शांत रखें और जल्दीबाज़ी में कोई फैसला न लें।

इस अवधि के दौरान आपको स्वास्थ्य संबंधी भी चिंता घेर सकती है इसलिए आपको अपने और अपने परिवार के स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

astrorobo.com

उपाय

- बेल की लकड़ी, पत्ते और फूल, खैर के पेड़ की लकड़ी, लाल फूल, ब्राह्मी, साबुत लाल मिर्च, काली सरसों और हरड़ का उपयोग आपके मंगल को बल देने के लिए किया जाना चाहिए। मुख्य सामग्री के साथ हवन करते समय, हवन में पीपल के पेड़ की शाखा, पत्तियों का उपयोग करना चाहिए। संकटा भ्रामरी दशा के दौरान उपाय करने से आपको बहुत लाभ होगा।

- आप अपनी विकट महादशा के दौरान 9 मुखी रुद्राक्ष पहनने से लाभ उठा सकते हैं।

संकटा - भद्रिका दशा

प्रारंभ तिथि:	16-11-2037 11:37
समाप्ति तिथि:	27-12-2038 7:37

संकटा योगिनी की छठी अंतरदशा "भद्रिका अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 16 महीने और 2 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी के रूप में "बुध" को माना गया है। बुध के प्रभाव की वजह से ये अवधि अनुकूल परिणाम देने में सक्षम है। इस अवधि में आपको धन, वैभव की प्राप्ति होगी।

ये अवधि आपके जीवन में लगातार चल रही परेशानी से राहत देगा। इस अवधि में आपके संबंध बेहतर होंगे तथा आपको आगे बढ़ने के मौके मिलेंगे।

ये अवधि आपके लिए आसान तो नहीं होगा किन्तु अपनी मेहनत से आप पहले से चली आ रही परेशानी से निजात पा सकते है। इस अवधि में आप कई सारी ज्ञान की चीजें सीख सकते है। यदि आप कोई ऐसी पढ़ाई करना चाहते है जो कि आप कई दिनों से चाह रहें थे किन्तु आपको मौका नहीं मिल रहा था तो ये अवधि आपके लिए सही समय है उन चीजों में अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए। जो लोग रोजगार के क्षेत्र में बेहतर करना चाहते है उनकी बेहतर नौकरी की तलाश इस अवधि में पूरी हो सकती है साथ ही आपके आय वृद्धि या पदोन्नति की भी संभावना है।

आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा, आपकी स्थिति पहले से अच्छी होगी। पैसे की तंगी दूर होने की वजह से आप अपने महंगे शौक पूरे करने की कोशिश करेंगे। आराम और सुख-सुविधा की सारी चीजें आप खरीद सकते है। आपको ये सलाह दी जाती है कि यदि आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी हुई है तो ये काफी अच्छी बात है किन्तु आपको अपने धन का खर्च थोड़ा संभल के करना चाहिए ताकि कभी किसी मुसीबत में आपके बचाये हुए धन आपके काम आ सके। आप जल्दबाज़ी में कोई फैसला न लें और किसी भी चीज पर विचार शांत मन से करें।

संकटा - उल्का दशा

प्रारंभ तिथि:	27-12-2038 7:37
समाप्ति तिथि:	27-4-2040 7:37

संकट योगिनी की सातवीं अंतर्दशा "उल्का अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 18 महीने और 18 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी के रूप में "शनि" को माना जाता है। राहु की दशा में शनि की अंतर्दशा होने की वजह से इस अवधि में कोई न कोई परेशानी लगी ही रहती है तथा ये अवधि आमतौर पर प्रतिकूल अवधि मानी जाती है।

इस अवधि के दौरान आपके जीवन में चुनौतीपूर्ण स्थिति बन सकती है। इस अवधि के दौरान सबसे प्रमुख चिंता का विषय आपके लिए आपका

astrorobo.com

स्वास्थ्य होगा। इस अवधि के दौरान आपको अपनी सेहत का ख्याल रखने की आवश्यकता है। इस अवधि के दौरान आपको कोई गंभीर घातक बीमारी होने की संभावना है। इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि आप नियमित तौर पर अपने स्वास्थ्य की जाँच करवायें और किसी भी प्रकार की समस्या होने पर तुरंत अपने डॉक्टर की सलाह लें।

आर्थिक रूप से भी आपको अनेक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। व्यापार में किये गए निवेश में आपको हानि हो सकती है या आप किसी प्रकार की धोखाधड़ी का शिकार हो सकते है। आपकी आय में कौटती या नौकरी जाने की संभावना भी बन सकती है। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपने पैसों को खर्च करते हुए थोड़ी सावधानी बरते ताकि आप कुछ पैसों की बचत कर सकें। आपको इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए की पैसे का निवेश कहाँ और कैसे किया जाना चाहिए ताकि हानि की संभावना बहुत कम बने। धन की कमी की वजह से आपको अपनी विलासिता भरी ज़िंदगी की कुछ चीजों का भी त्याग करना पड़ सकता है।

> कांटेदार पौधों का उपयोग करें। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ शमी/खेजड़ी के पेड़ या सेमल की शाखा, पत्ते या टहनी का भी हवन में उपयोग कर सकते हैं। संकटा तथा उल्का दशा के दौरान उपाय करना आपके लिए लाभकारी सिद्ध होगा।
>
> - विकट महादशा के दौरान 9 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

संकटा - सिद्धि दशा

प्रारंभ तिथि:	27-4-2040 7:37
समाप्ति तिथि:	16-11-2041 11:37

संकटा योगिनी की आठवीं और अंतिम अंतर्दशा "सिद्धा अंतर्दशा" है। इसकी अवधि केवल 10 दिनों को मानी जाती है तथा इसके स्वामी के रूप में "शुक्र" को जाना जाता है। शुक्र के प्रभाव की वजह से इस अवधि का परिणाम भी आपके जीवन में अनुकूलता और अच्छे समाचार ही लेकर आता है।

ये अवधि आपकी जीवन में चल रही परेशानी को दूर करने में आपकी मदद कर सकती है। इस अवधि के दौरान आपको अपने लक्ष्य को प्राप्त करने तथा जीवन में आगे बढ़ने के अनेक मौके मिलेंगे। इस अवधि के दौरान आपके आत्मविश्वास में भी बढ़ोतरी होगी जिसकी वजह से आपको आवश्यक समर्थन, प्रोत्साहन और ऊर्जा मिल सकती है। आपके वरिष्ठ अधिकारी आपके काम से खुश हो कर आपको ईनाम दे सकते है और आपकी आय वृद्धि या पदोन्नति की उम्मीद भी बढ़ जाती है। आपके लिए ये अवधि एक सकारात्मकता लेकर आएगा जिसमे आप अपने किसी भी कार्य को अंजाम दे सकते हैं, इसलिए ये अवधि आपकी परियोजनाओं को शुरू करने के लिए भी बिल्कुल सही साबित होगा। इस अवधि में आपको अन्य कोई परेशानी नहीं रहेगी जिसकी वजह से आप अपना पूरा ध्यान अपनी परियोजना पर लगा सकते है।

ये अवधि आपके मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी होगा, इस अवधि में आप मन से शांत और स्थिर महसूस करेंगे।

आपका व्यक्तिगत जीवन भी इस अवधि के दौरान बहुत अच्छा रहेगा। आपके परिवार और जीवनसाथी के साथ संबंध प्रगाढ़ होंगे साथ ही आपके बच्चें आपको अपनी पढ़ाई या नौकरी से जुड़ी कुछ खुशखबरी सुना सकते है। आपको अपने जीवनसाथी और बच्चों से साथ समय व्यतीत करने का मौका भी मिलेगा। आपके परिवार वाले आपसे बेहद खुश रहेंगे।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी आपको चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है किन्तु फिर भी आपको अपनी सेहत का ध्यान रखना चाहिए ताकि भविष्य में भी किसी परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। आपको सलाह दी जाती है कि आपको जो अवसर प्राप्त हो रहें है, उन अवसरों का अच्छी तरह से उपयोग करें और अधिक से अधिक लाभ कमा सकें ताकि कल को आपको किसी भी बात की ग्लानी न रहें कि आपने सही समय पर सही फैसला नहीं लिया।

astrorobo.com